राजस्थानी

साहित्य

गवरी बाई

मथुराप्रसाद अग्रवाल एवं ज्योतिपुंज

RJ
817.509 2
Ag 81 G

भारतीय
साहित्य रा

RJ
817.5092
Ag81G

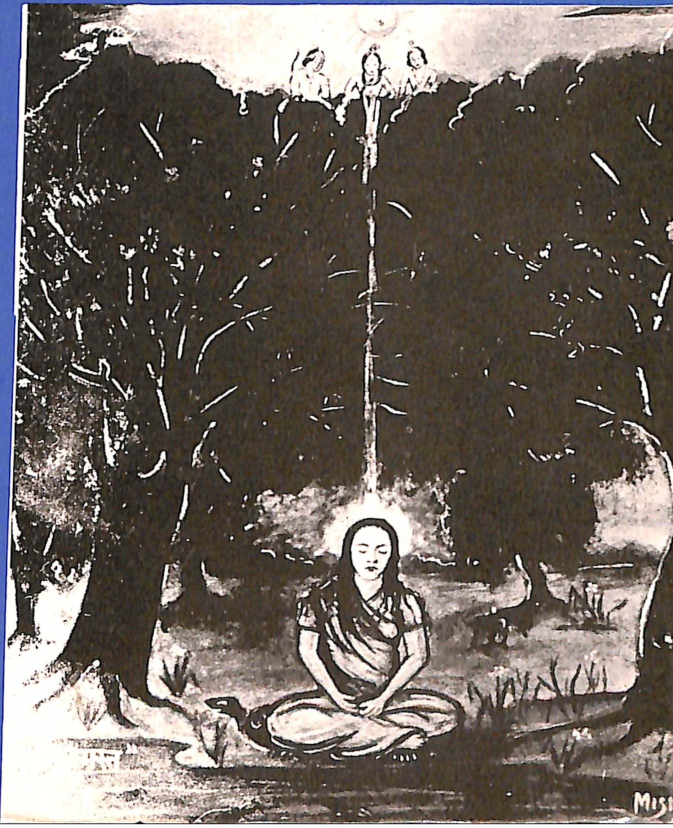

गवरी बाई

अस्तर माथै छप्योड़ी मूरतां री छिब में राजा सुद्धोदन रै दरबार रौ दरसाव : ज्यां में तीनं जोसी, भगवांन बुद्ध री मां, रांणी माया रै सुपना नै अरथावै। वांरै हेटै बैठौ मुंसी अरथाव री औळियाँ मांडै। भारत में लिखावट री हटोटी रौ कदास औ सबसूं जूनौ प्रमांण।

नागारजुनकोंडा, दूजौ सईकौ ई.
पसाव : राष्ट्रीय संग्रहालय, नवी दिल्ली

भारतीय साहित्य रा निरमाता

गवरी बाई

लेखक
मथुरा प्रसाद अग्रवाल
ज्योतिपुंज

साहित्य अकादेमी

Gawri Bai . A monograph in Rajasthani by Mathura Prasad Agarwal and Jyotipunj on the Rajasthani author. Sahitya Akademi, New Delhi (1996), Rs. 15.

Library IIAS, Shimla
RJ 817.509 2 Ag 81 G
00115856

© साहित्य अकादेमी
पैली खेप : १६६६

RJ
817.5092
Ag81 G

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय

रवीन्द्र भवन, ३५, फ़ीरोज़साह मारग, नवी दिल्ली ११० ००१
विक्रय विभाग : 'स्वाति', मिंदर मारग, नवी दिल्ली ११० ००१

क्षेत्रीय कार्यालय

जीवनतारा भवन, २३ ए/४४ एक्स, डायमंड हार्बर रोड, कलकत्ता ७०० ०५३
१७२, मुम्बई मराठी ग्रंथ संग्रहालय मारग, दादर, मुम्बई ४०० ०१४
३०४–३०५, अन्ना सलाई, तेनामपेठ, मद्रास ६०० ०१८
ए डी ए रंगमिंदर, १०६, जे.सी. मारग, बंगलौर ५६० ००२

मोल : पन्दरा रिपिया

Indian Institute ... ... Science
ACC NO. 115856
11/11/2004
SHIMLA

ISBN 81-260-0000-7

आवरण–चित्र स्रोत : 'वाग्वर' शोध–पत्रिका, डूंगरपुर

लेज़रसैटिंग : ज्योति लेज़र टाइपसैटिंग, दिल्ली ११० ०६२
मुद्रक : कलरप्रिंट, दिल्ली ११० ०३२

राग प्रभाती

कुंण मेरो जनम सुधारे, प्रभु बिना, कुंण मेरो जनम सुधारे रे
भक्त वत्सल तेरे चरन सरण का, तुंहीं बिना कून उगारे रे, कुंण.
अजामिल सुत हेते तार्यो, गज ग्राह थी छोडायो रे
द्रुपद सुता की लज्जा रख्वी, द्वारकां से वेगे धायो रे, कुंण...
भारत में प्रण भीष्म का रख्वा, अमरीष श्राप न लाग्यो रे
भक्त कारन सूदरसन भेजा, दुरवासा जाये भाग्यो रे, कुंण...
और और कुं और आसरो, मेरो भरोसो कनैयो रे
गवरी कहे भवसागर तारो, केसव तुंहीं खेवैयो रे, कुंण...

राग ललित

अविगत की गति, को नहीं पावे। सचराचर में हरि वेद वतावे।
निगम निरंतर नेति वरवाणे। ताकूं जसोदा हरखे हलरावे।। अवि...
उपनिषद नो सार श्री कृष्ण वाकूं। समर्या बंधन कट जावे।
सो हरि नीको नंदरानी पें। कर जोरी उरवल बंधावे।। अवि...
अज–सीव वाको पार न पावे। जोत रूप जोग ध्यानी धावे।
सो हरि आहीर के घर चोर। चोर दधी माखन कूं कहावे।। अवि...
अजर अमर अगम अगोचर। अखंडानंद अविनासी कहावे।
गवरी के प्रभु ब्रह्म सनातन। तेरी गति में प्रभु तूं ही ज पावे।। अवि...

वागड़ मांय संतां-भक्तां री प्रसस्त परम्परा

वागड़ री भोमका तो संतां, भगतां अर मा 'पुरुसां री री है। संतां–भगतां रे सुचरितां अर वणांरा अणमोल्या उपदेसां सूं जन–जन रे मन–मानस री व्यथावां, खोटी प्रवृतियां अर अनिस्ट करमां रो समन, लारों–लार आगे बढ़वा रो मारग निस्कंटक वे 'तो रियो है। वागड़ मांय जायगां–जायगां पे विसम स्थितियां रे बावजूद हिरदे–परिमारजन रो जबरो अर पवितर काम समये–समये पे संतां–भगतां रे प्रादुरभाव सूं अंजाम व्हेतो रियो है। वागड़ मांय अस्या संतां अर भगतां री प्रसस्त परम्परा चालती री है–

(१) भगत-कवि दुरलभजी वागड़ रा नरसैया, गुरु मा' राज रे नाम सूं प्रसिद्ध। अणांरो जलम सौरास्ट्र रे जूनागढ़ रा वड़नगरा नागर ब्राह्मण हरिनंदन पंड्या रे घरे विक्रमी संवत् १७५३ री काती वदी तीज, दीतवार ने व्हीयो। माता रो नाम हीरां–

गुर्जर धरहि गांम निवासी। पंड्या हरिनंद गृहवासी।।
नाम हीर जशोदा अनामी। कुख सुधारे प्रगटे स्वामी।।

कम उमर में घर छोड़ दीदो। यी वागड़ मांय वि.सं. १७७७ मांय माही नद रे किनारे वस्या गांम भी लूड़ा मांय आया। जठा रे रघुनाथ मंदिर रा किवाड़ सावणी पूनम वस्तवार ने आपुंआप खुल जावा री वात प्रसिद्ध है–

तब नागर द्विज व्यंग वोलाई, आप बड़े भगतन भये भारी।।
प्रभु ही पोकारी द्वार उघडावो, हम लोगन को दरस कराओ।।
पूर्व भक्त नरसिंह हुए भारी, दामोदर माला पहनाई।।
आप प्रसिद्ध भक्त निर्विकारी, निस्चय द्वार उघड़ि है भारी।।

अर फिर–

पद अेकादस प्रेममय सुख समागम हेत।
संवत सतर सतोतरा सावण मास संकेत।।
दिन पूर्णिमा वार गुरु अभिजित विद् मध्याह्न।
संत समागम ते समे दुर्लभ दृग मम जान।।

भगत दुरलभ जी ने आपणें भगवान पे पूरो भरोसो हो हींज। जदींज द्वार उघड़िया अर सब देखता रेई गिया।पछे यी बांसवाड़े परा गिया। अणांरी परम्परा मांय कतराई भगत व्हीया। अणां रे भजनां रो हस्तलिखित संग्रे' मंदिर मांय है। अणांरे भगतां रो विस्वास के गुरू मा' राज री किरपा बिना कोई भी अणां ने पढ़ या समझ नीं सके। अणां री रची अनुभव गीता, सुदामा चरित, रास अने गीत, सिंगार, ग्यान, विनय, दान

लीला अर महियारी नां पद, नाम मे 'मां, सद्‌गुरु में' मा आद। अणां रे बारा मांय कह्यो जावे के यी सदेह सुरग पधारिया–

संवत् सतरा त्राणु मांही। अंतर्ध्यान सदेह जग मांही।।

(२) आपणां सिस्यां मांय विस्नु रा कल्कि ओतार रे रूप में मान्या जावा वारा संत मावजी रो जलम साबला गांम रे औदीच्य ब्राह्मण कुल मांय वीयो। साबला मांय मावजी रो मंदिर है जर्णी मांय वणां री संख, चक्र, गदा अर पद्‌म सहित घोड़ा पे सवार चतुरभुजी मूरती है। मावजी रो पे'लो अर तीजो व्याव औदीच्य ब्राह्मणां री लड़कियां सूं'–दुजो एक राजपूत री लड़की सूं अर चौथो एक पटेल री विधवा स्त्री सूं वेणों बतलावे। वैष्णव धर्मावलंबी कतराई पटेल (कुनबी), राजपूत, ब्राह्मण, सुनार, छीपां अर दरजी आद वणां रा अनुयायी है, जी वणां री वाणी ने बड़ा प्रेम सूं सुणें अर वणां रा, रच्या भजनां ने चाव सूं गावे। वाणी रे सिवा 'न्याय' नाम री वणांरी वणांई पोथी में जीवणदास औदीच्य रा पूछ्या एक सौ आठ सवालां रा पडूतर बड़ी योग्यता सूं दिया गिया है। 'ज्ञान भंडार, अकल रमण, सुरानंद, भजनस्तोत्र, ज्ञान रत्न माला अर कालिंगा हरण आद वणां रा रच्या दूजा ग्रंथ है। जणां री भासा हिंदी सूं मिली–जुली वागड़ी है।

मावजी रे सम्प्रदाय रा अनुयायी अपने–आपने विस्नु सम्प्रदाय रे अंतरगत ई समझे। मावजी रो खास मंदिर अर गादी साबला मांय है, जठे जाइने अणांरा अनुयामी कंठी बंधावे। अर्णी सम्प्रदाय रे अनुयायियां री संख्या ८००० रे ऊपर वेंयी। साबला अर पूंजपुर रे अलावा वेणेस्वर, ढ़ालावाला, सैंसपुर (सलूंबर रे पास), पारोदा गांम (बांसवाड़ा) मांय मावजी रा मंदिर है।

(३) **लालजी री परम भगत अर वागड़ री मीरा : गवरीबाई** रो समयो वि.सं. १८१५ सूं १८६५ तांई है। अणांरा रच्या सैकड़ा पदां मांय ग्यान, भगति अर वैराग री मे' मा बतलायी गी है। अणां रे पदां री भासा राजस्थांनी, जर्णी मांय गुजराती, ब्रजभासा अर स्थानीय डूंगरपुरी (वागड़ी) री यत्र–तत्र छाया स्पस्ट नजरे आवे। थोड़ा' क सबद संस्क्रत रा पण मिले।

(४) **सूरमा अभेसिंग** खुद विद्‌वान, भगत अर कवि ई नीं, सदाचारियां अर विद्‌वानां ने आश्रय देवा वारा भी हा। अणां न केवल भजन ई रचिया वरन् ग्रंथ लिखवाया, संस्क्रत रे ग्रंथां रा वागड़ी मांय अनुवाद तक करवाया अर संग्रे' त्यार करवाया। जणां मांय नागर सिवलाल रा जुगल विहार, मंत्र–मनोरथ, विवेक बावनी, जमुना जस परकास, नवधा भगति निरूपण खास है। अणां रा लिखवाया ग्रंथ–अनंत चतुरदसी, पदम पुराण, पुरुषोतम मा'तम अर भागवत आद। सूरमां अभेसिंग रा रच्या पद, भजन आद घणे महत्व रा, जणां री सुर–लेरियां वागड़ री भजन मंडलियां मांय गूंजती रे। अचरज तो

जदी व्हे जदी विस्म्रति रा गरभ मांय समाया अणीं भगत रा नामी भजनां अर पदां ने भजन–मंडलियां तक मांय गायक तक अणीं 'अमय' रे बारा में मौन रे। काव्य मांय अभेसिंग रो ग्रहित नाम, उपनाम 'अबो' 'अमे' मिले। अणां रे इस्टदेव रो रूप जुगल–राधा–क्रिस्न। अणां रे भजनां रो बोंत बड़ो भाग राधा–क्रिस्न रे वासते ईज। भगत अर कवि अभेसिंग री रचनांवां रो अधार स्याम; राम, सिव, सगति, गणेस अर भैरव रा भजन तो सबी मिलाइने दस सूं जादा नीं वे'ई। कवि 'अबो' रा प्रिय छंद–घनाक्षरी, काफी, ठुमरी, गोडी, सोरठा आद। छंदा रा प्रयोगां सूं मालम पड़े के प्रतिभा रे साथे–साथे काव्याभ्यास भी हो।

मांने ताजो लागे, राधेवर जी रो नाम।
यही नाम गज गणिका तरी, पीपा, कबीर लइ धाम।।
द्रुपदा दीन भई जब बोली–'धाओ धाम अब राम'।
ऐसे वेग आये हरि जब तो, पाई हे सुख विसराम।।

वागड़ मांय संतां अर भगतां री या परम्परा आदिवास्यां रा आध्यात्मिक गुरू अर सुधारक 'गोविंद गरु' तक चाले। अणां रो वागड़ भोम मांय सम्प्रदाय है। अणीं मांय दीक्षित 'भगत' के'वाय। जणां रो विसतार वागड़ अंचल री सीमावां ने लांघ ने गुजरात, मालवा आद तांई मिले।

गवरी बाई

संत अर भक्ति रे साहित रो जतरो आछो संगरे' राजस्थांन में मिले, वतरो दूजी जगां नीं। अणीं रो अधार यो भी रह्यो के राजस्थांन हिन्दू नरेसां रे अधीन रे' वा ऊं, अठे धरम ने हमेसां ई प्रोतसा'न मिलतो रियो। मुग़लां री यातनां उं त्रस्त संत-भक्त जदी भ्रमण करतां-करतां राजस्थान आया तो अठा री सांति-पसंद जनता अर अठारो सांत वातावरण देखने, वणां रो हिरदो पिघल्यो अर वी अठे ज्यादा समये रि'या। गोरख, कबीर, दादू, रैदास आद मा'तमा' राजस्थांन री पुण्य भोम पे विचरण करतां, आपर्णी वाणियां ऊं राजस्थांन रा जन-जन ने जागरत्त कीदो।

गिरधर री दीवानी मीरा, श्रीनाथजी री गजब री भक्त अजबकुंवरि बाई, ठाकुर 'लालजी' री अमर गायिका गवरी बाई [1] आद री जळम भोमका वे'वा रे कारणें भारतीय संत-भक्तां रे वासते राजस्थांन तो तीरथ जुंई। मतवाली मीरा री अमर वांणी आखा'ई भारत री गौरवमय ध्वनि वण ने गूंज री है तो अजबकुंवरी रा रच्या पदां री स्वर लहरियां उं श्री नाथद्वारा रो श्री जी-धाम रात-दन सराबोर रें। राजस्थांन रे सुदूर दक्षिण रे वागड [2] री मीरा गवरी बाई रा पद, भजन आद में वणां री अलबेली भगति-भावना री बेलड़ी दूधां न्हावती अर वधावा वांटती पसरती नज़रे आवे।

वागड़ में संता अर भगतां री प्रसस्त परम्परा मिले-दुरलभजी (विक्रमी संवत् १७५३-१७६३); मावजी (वि.सं. १७८४-१८०१) अर गवरी बाई (वि.सं. १८१५-१८६५); या परम्परा सूरमां अभेसिंग (वि.सं.१८७७-१९३८) तक चाले।

आपणें आराध री अमर गायिका बाई गवरी ने विद्वान गुजराती कवयित्री मानवा रो उल्लेख करता रे पर या तो निस्चत रूप उं राजस्थांन (वागड़) रे डूंगरपोर रीं'ज।

गवरी बाई रो जळम, व्याव, साधना सभी डूंगरपोर में इ'ज वी। अणां रा पूरवज अणां रे जळम रे कोई तीन सौ-साढ़ा तीन सौ वरसां पे'ली आइ ने [3] गिरपुर [4] (डूंगरपोर)

---

१. गौरी बाई; पर अणां रा रच्या पदां मांय 'गवरी' सब्द इं मिले।

२. आज रा 'डूंगरपुर अर वांसवाडा जिला; वागड़ राजस्थान रे सुदूर दक्षिणांचल रो पुराणों नाम जो गुजराती भासा रे 'वगड़ा' सबद उं मेल राखे। 'वगड़ा' रो अरथ वन=जंगल, जठे वगड़ा (जंगल) जादा अर आबादी कम, वर्णी ने वागड़ के 'अठे जंगल घणां अर आबादी कम, तो 'वगड़ा' सबद उं अणीं रो 'वागड़' नाम युक्तियुक्त।

३. अर्णी बारा में दृष्टव्य : परिसिस्ट (१) 'बड़नगर रा नागर ब्राह्मण वागड़ मांय..'

४. डूंगरपोर रो संस्क्रत नाम : गिरपुर : गिरिपुर : डूंगरपोर चारई आड़ी सूं पहाड़ियां उं धिरयो, अठा री बोली मांय 'पहाड़' ने 'डूंगर' के', अर्णीज वासते संस्क्रत रा पंडितां संस्क्रत में 'डूंगरपोर' रो नाम 'गिरपुर' घड़ लीदो, 'डूंगर' अर गिर (गिरि) रो अरथ एक ई, कतराई पुराणां सिलालेखां आद मांय अणीं रो नाम 'गिरपुर' तक मिले।

बस गिया हा। गवरी बाई रे समये वणां रे वासते ई वणवायो मंदर, वापी अर वणां रो पुस्तेनी मकान डूंगरपुर में मौजूद, वो मोहल्लो 'गवरी बाई नो ढारो' रे नामऊं जाण्यो जावे।

आज उं लगभग दो सौ–सवा दो सौ वरसां पे'ली वि.सं. १८१५ (ई. सन् १७५६) में गिरपुर (गिरिपुर) आज रो डूंगरपोर : डूंगरपुर रे वड़नगरा नागर ब्राह्मण कुल में गवरी बाई (गौरी बाई) रो जळम व्यो। मात–पिता कन्या रतन रे जळम पे आपणें–आपने घणांई धन भायग समझ्या। कन्या व्हे के पुत्र, दोयां में कई फ़रक नीं, अस्यो सोच–विचार ने वणीं रो लालन–पालन करवा लाग्या। मां–बाप रे संस्कारां अर भाव–विचारां रो असर संतान पे पड़्या वनां नीं रे।

गवरी बाई रो जीवण मीरा रे समान ई अभावमय रि'यों, के' वे के यी पाँच–छः वरस रा हा, जदी'ज व्याव व्यो, एक तरांउं गुड़िया–व्याव ई। व्याव रे हेतु रो अणां ने कई ग्यान नीं। सुणवा में आवे के व्याव रे चार दिनां पे'लां ई बाई री आंख्यां दुखवा लाग'गी तो आंख्यां पे पाटी (पट्टी) बांध दी दी, जा पति रे कोई अग्यात रोग उँ देहावसान तक नीं खुल सकी अर पतिदेव रो श्री–मुख तक देखवाउं यी वंचित रि'या। व्याव रे एक सप्ता'– केड़े ई अणां री मांग रो सिंदूर पुंछ गियो। पति–पतनी रे साथ रो कणीं तरे' रे प्रेम रो प्रादुर्भाव नीं वेई सक्यो। जदी कोई के'ता के 'थारो सुवामी हमेसां रे वासते नीं रि'यो तो सरल भाव उं जवाब मिलतो–मा'रो सुवामी, पति तो परमेसर. ..अजर–अमर, मूं किस्तर विधवा...कूंण के' म'ने विधवा?–'बस या परमेसर री लगन बाई ने भगति में लेई गी, ग्यान रा घेरा में ले'ई गी।

गिरपुर में वड़नगरा नागर जात में माँ–बाप बाल विधवा वेधव्य–धरम पाल सके, नेम में रे' सके अर प्रभु–भगति में चित्त ने ठे'राई सके, अणीं रो घर में आछी तरे'उं प्रबन्ध करता हा। वणीं वगत विधवा रो जीवण घणों ई कठण हो, अणीं ज वासतेई बाई रा मात–पिता अणां ने पढ़ावणों–लिखावणों सरू कीदो।....

समयो पाइने बाई पढ़–लिख ने होस्यार वी। जदी ई ग्यारां' वरस रा व्या तो घर उं बा'रणें जाणों छोड़ दीदो अर घर में ई एकांतवास लेइ ने आपणों जादातर समय पूजा–पाठ, भजन–कीरतन में बीतावा लागा। बाकी समया में भागवत, गीता, मा' भारत आद धारमिक पोथ्यां पढ़वा–सुणवा रो क्रम चालतो रे' तो अर दूजा रा रच्या पदां–भजनां ने गावा रे लारे–लारे ग्यान अर भगति [५] रा मारग पे गवरी बाई खुद पद रच–रच

---

५. १. धन, जोवन, सुख–सम्पति, सब है सावन का बदरा।

२. लोभ लहर गहरी नदी, लख चौरासी धार।
नुगरा–नुगरा रह गया, सुगरा उतर्‌या पार।।

३. वुध गुलाब, चित केवड़ो, फूल रही पुलवार।
मुकत कली है खिल रही, गूंथे क्यूं नी हार।।

ने प्रभु रे साम्हे तन्मय वेई ने गाया लाग्या।

मानव–मन री दो खास वृतियां–एक अनुकरण या सहजानुभूति, दूजी अभिव्यंजना। पे'ली मानव–मन में भावां–विचारां री अनुभूति करावे तो दूजी वणां ने अभिव्यक्त। अणीं अभिव्यक्ति रे वासते ई भासा री थरपनां व्ही। दूजी कलावां में अभिव्यक्ति रा साधन–सुर, वर्ण, रंग आद पण साहितिक अभिव्यक्ति में भासा रो ई प्रयोग व्हे। आवा–जावा वारा ने बाई के'ता रे'ता–'अणीं संसार में मातर परम प्रभु रो नाम अर वणीं रो सुमरण ई सांचो–

गवरी चित में चेतिये, तजो राग अरु बैर।
सत्य नाम ही समर लो, हरि करेगो म्हेर।।

झूठी काया रा काम घणांई काचा। अणीं दे'ई रा मो' में फंसणों व्रिथा, कई फ़ायदो नीं, घूम–घूम ने पाछो–पाछो जळम–मरण रा फेरा में पड़णों–

हरि नाम बिना और बोलना क्या, हरिकथा बिना और सुणना क्या
सुखसागर सामलियो त्यागी, कुबड़े के घर डोलना क्या।
घट भीतर गिरधारी पाया, बाहेर द्रिग फिर खोलना क्या।।
आतमा अखंड आवे ने जावे, जनम नहीं फिर मरना क्या।
गवरी ब्रह्म सकल में जान्या, जान्या तो जद बोलना क्या।।

धीरे–धीरे बाई रे सात्विक भगतिमय जीवण री मे'मा, ख्याति अर ग्यान–गरिमा चार'ई आड़ी फैलवा लागी तो हज़ारां री संख्यां में लोग दरसन करवा ने अर भजन सुणवां ने आवा–जावा लागा।[६]

गवरीबाई रो संमयो डूंगरपुर राज–शासन रा तीन महारावल रा राज–कांल [७] उं मेल राखे–

१. **महारावल** शिवसिंग (सिंहासनारूढ़ वि. सं. १७८६ : ई. सन् १७३०/देहावसान वि. सं. १८४२ : सन् १७८५)

२. **महारावल** वैरिशाल (सिंहासनारूढ़ वि. सं. १८४२ : ई. सन् १७८५/देहावसानं

---

६. (अ) वगड़े वास पुर्यो रे वनेश्वर, गेफसागर गंग पास।
नर–नारी जन दरसन आवें, पुरे सबन की आस।।

(ब) गेफसागर गंग हूं नाई, दरसन आवत बहु नर–नारी!

७. ओझा : डूंगरपुर राज्य का इतिहास प्रथम संस्क. संवत् १९९२ क्रमशः पृ. १२८–१३०. पृ. १३२–१३३ तथा १३४–१४०

वि. सं. १८४७: सन् १७६०)

३. **महारावल** फते' सिंग (सिंहासनारूढ़ वि. सं. १८४७ : ई. सन् १७६०/देहावसान वि. सं. १८६५ : सन् १८०८)

क्रम २ और ३ रो राज–शासण तरे'–तरे' री आपत्तियां–परेशानियां री घनघोर गरजनां रो समयो रि'यो।[८] मा'रावल राम सिंगजी रा चौथा पुत्र शिवसिंग वीर, बुद्धिमान, कवि, विद्वानां रो आदर करवा वारा, राजनीतिज्ञ, अर दानी राजा हा–

शिव सिंह सूर दातार सीम। नवखंड नाम क्रत अचल नीम।।
गज–ग्राम तुरी दीनें विशाल। अन्नेक कवी कीने निहाल।।[९]

अणां आपणीं प्रजा रे हित शासन–प्रबन्ध में कतराई सुधार कीदा। पचपन रूप्या भर रो नवो शिवसाहीसेर जारी कीदो, ताकि कोई वेपारी कणीं ने कम नीं दे सके। कपड़ा नापवा रो नवो गज थरप्यो ताकि राज में एक नाप उं कपड़ों मिले। दरबार रे समये शिवसाही पागड़ी बांधवा रो तरीको निकाल्यो। यी काव्य रा जाणकार अर शिल्प प्रेमी हा। आपणीं कल्पना रे मुजब नवी तरे' रो शिवसाही झरोखो वणवायो। नगर में वर्णी तरे' रा झरोखा वणवा लागा, जणां उं राजधानी री शोभा में बढ़ोतरी व्हेवा लागी। अस्या झरोखा वणावा वारा ने यी वणियो–वणायो झरोखो बिना कीमत रे देता हा। अणां राज–भवन ने दुरस्त करायो। त्रिपोलिया रो सुन्दर दरवाजो वणवायो। गैबसागर रा तट पे आपणीं माँ री याद में शिवज्ञानेश्वर शिवालय (वि.सं. १८१३, ई. सन् १७५७); दक्षिण कालिका मंदिर (वि.सं. १८३४ : ई. सन् १७७८) अर उदय विलास मे'ल में चतुरस्रकुंड वणवायो। डूंगरपुर नगर रे चार' ई आड़ी पर कोटो वणवायो। कतरी' ई आछी–आछी ईमारतां अर मंदर राजधानी में वणवाया। वेपारियां ने कतराई सुबीता देइ' ने व्योपार री तरक्की रे वासते मेला भी लगवावणां शरू कीदा। अणां रो राज–काल सुख–शांति अर चहुँमुखी तरक्की रो हो।

गवरीबाई री कीर्ति–कथा जद तात्कालिन मा'रावल शिवसिंग जी तक पोंची तो वी अणां रे घरे पदारिया। बाई दरबार रो घणों आदर–सनमान कीदो, धरम अर प्रभु–भगति पे विचारां रो आदान–प्रदान वीयो, वातां रे दौरान प्रश्नोत्तर तक वीया। बाई री जबरी दृढ़ता देख' ने मा'रावल सा'ब कतरा'ई कोतुक अनुभव करने घणां राजी वीया। गवरी बाई रे प्रति मा'रावल शिवसिंग जी रे श्रद्धा–भाव में शनै–शनै बढ़ोतरी वे'वा लागी।' मनक जमारो मिलणों ई मुस्कल अर वो मिल भी जाय तो वो भी क्षण–भंगुर। अस्या क्षण–भंगुर मनका दे'ई में भी भगवान् ने प्रिय संतजन रा दरसन तो वणी उं

---

८. अर्णी बारा में दृष्टव्य : परिसिस्ट (२) 'वड़नगरा नागर ब्राह्मणां डूंगरपुर छोड़्यो...'

९. संढायच किसनसिंग नौगामां–मांडव : 'उदयप्रकाश' (मुद्रित संम्वत् १९६७–१९१० ई.) पृ. १२

भी घणां दुरलभ।[१०] यो सोचने संत भक्त बाई गवरी रे वासते नवों सुंदर मंदर अर नजीक ई वापी वणवाई दीदी[११] तो बाई, बे'न[१२] री पुत्री चतुरी बाई,[१३] जमनां बाई[१४] अर सगी हरिया रे लारे मंदर में रे'वा लागा।

मंदर में ठाकुर जीं रो सरूप घणें ई हगाम–ठाठ उं संवत् १८३६, माघ सुद छट, गुरूवार ने प्रतिष्ठित करयो ग्यो....

.....ए मंदिर की सुंदर शोभा, देखतां दिल्ल लोभाया।
ये भेद जन तो तारे पावे, वस राखे मन काया।
संवत १८३६ मांहे, माघ शुक्ल पक्ष आया।
वसंत षष्ठी, सत गुरूवारे, रामलला पधराया।।......

ठाकुर जी री सेवा–पूजा, आभूषण–धारण रे लारे मंदर में कथा, भजन–भाव अर कीरतन वे'वा लागा, पंडत–विद्वान आवा लागा। वेद–शास्तर री वातां–चिता रो यो मंदर केन्द्र वण गियो। सत्संग उं बाई री वाणी मुखरित वे'ईगी अर वी आपणे मधुर कंठ उं स्वरचित पद गावा लागा। बाई रो सरीर सुन्दर, मुख–मुद्रा तेजस्विनी अर कीरत्न–सैली मन ने मो'वा वारी अते श्रोतावां–दरसकां पे वणां रो जबरो प्रभाव पड़तो।

समय अर सुविधा मुजब मा'रावल शिवसिंग जी तक प्रभु–भगति में शामल वे'ता। अणी' सब रो घणों लाभ गवरी बाई रे शास्तर ग्यान में बढ़ोतरी अर काव्य–प्रतिभा रा विकास में वियो। वी घणां आछा भावमय भजन कीरतन आद वणांवा लागा।...

---

१०. (१) अमूलख अवसर आयो, दुर्लभ देह मनुष को पायो। : (गवरी बाई)
(२) नक्कारा मोत का बाजे, कि सावन मेघ ज्यूं गाजे। : (गवरी बाई)
(३) सोदागर सोदे आया वे, समझने मन मेरा वे।
अनित्य का भरोसा कैसा, छित्र में हारेगा ऐसा। : (गवरी बाई)

११. अंणा रे रेवा रे वास्ते एक मकान तक वणवायी देवा रो जिकर तक मिले। ('मरू–श्री' शोध त्रैमासिक भाग–४, अंक–४, सितम्बर ७५, पृ. ४७)

१२. गवरी बाई रे एक बेन ही, जणीं रो नाम चंपु हो; वणां रे एक पुत्र फूलसंकर अर दो पुत्रियां–चतुरीबाई अर जमनाबाई ही।

१३. चतुरीबाई व्याव रे एक वरस केड़े ई विधवा वेइ गिया हा।

१४. जमनाबाई रो व्याव वेलसंकर रे लारे वियो, अणां रे प्रभासंकर, रूपसंकर दो पुत्र अर तुलजा एक पुत्री ही, प्रभाशंकर री पतनी मांझुंकुवर अर वणां रा दो पुत्र–ब्रजलाल व क्रिस्नलाल रे कासी मांय संवत् १९६४ (ई सन् १९३७) मांय विद्यमान रे' वा री जाणकारी मिले। (गवरी–चरित्रः अचरतलाल–मणीराम भचेच)

आवा–जावा वारा साधु–संत्ता ने रोज सदावर्त मिलवा रो सुन्दर प्रबन्ध मा'रावल सा'ब कर दीदो। एक दन संतां रो समूह सदावरत लेवा ने मंदर आयो, वणी' में एक रामानंदी [१५] मा'तमा ग्यानी पोंचिया थका...बाई रे तेज ने देखताई वणां कह्यों 'बाई ! तुम तो मीराबाई का अवतार [१६] हो, बाई मीरा के ज्ञान मार्ग में उस समय में कुछ शेष रह गया, उसको ही पूरा करने के लिए यह तुम्हारा अवतार है, यह सब बतलाने के लिए ही आज मेरा इधर आना हुआ है।' अतरो के'ता ई ग्यानी मा'तमा बाई ने एकांत में लेई गिया अर ब्रह्म–ज्ञान व आतम ग्यान रो उपदेस देतां योग–मारग भी बतायो। सबां री मौजूदगी में सिर पे आशीरवाद रो हाथ मेलतां बाल मुकुन्द (लाल जी) रो सुंदर, नयनाभिराम सरूप भी दीदो अर चलतां–चलतां आंख्यां उं ओझल...व्हे ग्या। पाछा कदी'ई नीं पदारिया...।

झवेरी श्रीकृष्णलाल [१७] गवरी बाई रे गुरू रे रूप में कणीं रामानन्द रो नाम दे, पर वेणों चावे कोई रामानंदी।

विद्वान [१८] बाई गवरी रे अखा परम्परा रे संत हरिकृष्ण [१९] री शिष्या वे'वा री वात भी करे अर गुजराती साहित में अणां रे वेदांती कवयित्री रे रूप में प्रसिद्ध व्हेवा री चरचा तक करे। अर उद्धरण देतां पुष्टि करे–

ज्ञान घटा घेंरानी अब देखो।
सतगुरू की किरपा भई मुझ पर, शब्द ब्रह्म पहचानी।। अब।।
व्रेह वैराग्य बदरिया छाई, भक्ति भाव टेरानी।
अनुभव बीज चमकने लागी, अनहद गाजे निसानी।। १।।
मनसा मोर कला कर नाचे, पशु पंखी हरखानी।
प्रेम पपैयो बोलन लागे, अमीरस महा बरखानी।। २।।
प्रेम को कीच मच्चो मेरी सुजनी, चहुं दिस हो गया पानी।
मेघ माघो बरसे क्रीया द्रिग से, त्रिविध तपत बुझानी।। ३।।
ध्रुव, प्रल्लाद, कबीर, रोहीदास, रस पिये शंकर ग्यानी।
गवरी अनुभव स्वयं प्रकासा, आप में आप समानी।।४।।

---

१५. अणीं बारा मांय दृस्टव्य : परिसिस्ट (३) स्वामी रामानंद अर वंणां रो सम्प्रदाय

१६. डॉ. मोतीलाल मेनारिया : राजस्थानी भाषा और साहित्य (सं. २०१७, वि.) पृ. २७०/ राजस्थान का पिंगल साहित्य (प्रथम संस्क. १६५२ ई.) पृ. १५७

१७. गुजराती साहित्य नां मार्गसूचक स्तम्भो

१८. डॉ. कांतिकुमार भट्ट : गुजरात की हिंदी कवयित्रियां : 'गुर्जर–श्री' (१६७५) पृ. ४७

१६. अणीं बारा मांय दृस्टव्य : परिसिस्ट (४) 'अखा परम्परा रा संत, हरिक्रिस्न (स्वामी सहजानंद)'

गवरी बाई ग्यान–वेराग में आगे बढ़वा लागा। समाधी आवा। लागी एक दन, दो चार अर पछे पन्दरा–पन्दरा दिनां तक... कई खाता–पीता नी... दे'री पे'चाण तक नी रे'ती.... एकांत कमरा में आसण लगाइ ने विराज जावता... किंवाड़ बंद... समाधी उतरती तो किंवाड़ खुलता... चतर बाई सनान करवावता। पछे नियम उं सेवा–पूजा, कथा, भजन–कीरतन में मगन रे'ता....।

समाधी सांची, के दिखावो? बाई हरियां रे दिल में भेम उठ्यो.... तो वा समाधिस्थ बाई रे पां छीपी गी' अर जांघ में सुई घुसाई दीदी पर दे' नी हाली, नीं कांपी, अचल–अटल री, तो सुई पाछी खींचा वनां ई भाग आयी... पछे सनान रे समये चतरां जदी जांघ में सुई देख'ने ताज़ब में पड़गी के यो काम कणीं रो....? पूछ–ताछ वे'वा लागी... पर कोई नीं बोले... सब चुप... अतराक में हरियां रे दे' में कोढ़ निकल्यो तो वा दौड़ ने बाई रे पगां में पड़गी.. अपराध मंजूर करतां मांफ़ी मांगवा लागी...लोट–लोट ने....। बाई गवरी रो हिरदो तो दया रा भाव रो समन्दर...नाम मातर भी क्रोध नीं... कह्यो–'जा! कोढ़ री जगां थारो सरीर सुफेद रे'गा अर थने कई कष्ट नीं वेगा।'[२०] कणीं ठीक ई कह्यों है–

> तरवर, सरवर, संतजन, चौथो वरसण मेह।
> परमारथ रे कारणै, च्चारां धारी देह।।

बाई ने वाक–सिद्धी प्राप्त ही, जो के'ता, वस्यो इज वे'तो। सुणवा में आवे के घणां ने अस्यो अनुभव वियो हो।

समया रे बहाव रे लारे बाई गवरी री भगति, ग्यान अर योग–साधना में गे'राई आवती गी, ऊँचा विचारां रे आवा रे साथे–साथे वी तरत पद वणांई लेता।

मालम पड़े के वैधव्य रा पे'ला प्रहर में यी राम–क्रिस्न री सगुणोपासना में रत रि'या। बाहरी जगत री शुष्कता में हरीतिमा अंकुरित करवा ने अस्यो सुवाभाविक हो, कौशल्या मात श्रीराम ने गोदी में रमावतां घणीं आनन्दित वे'ई री है–

> कौशल्या, हरीकुं गोद खेलावे।
> सीव, ब्रह्मादिक ओर सनकादिक, याको पार न पावे।।
> सिर पर मुकुट, मकराक्रत कुंडल, सोभा बरनी न जावे।
> मंद हास, कमलदल लोचन, निरखी परम पद पावे।।
> पीत झगा पहुंची प्रभु के, वांकलां सुंदर सोहावे।
> कौस्तुभमणी, कंठ विराजे, रवी राशी झांखा थावे।।

---

२०. 'वाग्वर' त्रैमासिक सोध–पत्रिका, भाग पे'लो, अंक चौथो, संस्था–स्थापना दिवस १९६१ ई. पृ.६

फुली कौसल्या, पुलकीत गात्र, हेते हरी कुं हसावे।
दास गवरी ए छबी निरखत, आनंद उर न समावे।।[२१]

गिरधारी क्रिस्न भी गवरी ने मीठा लागे–

मीठा लागो छो रे, गिरधारी ज्यु।
मोर मुगट, कटी पीतांबर, बनी चंदन की खोर।।
यमुना की तीरे धेनु चरावे, मुरली बजे घनघोर।
सोहनी सुरत, माधुरी मुरत, मोहन चित्त चकोर।।
प्रेम मेघ मंद–मंद बरखाई, मधुरा बोले मोर।
अंतर में नीरंतर नीरखुं, उठे आंनद अंकुर।।
दिन–दिन प्रेम अधीक लग्यो री, बांध्यो नेह को पुर।
गवरी गिरधर सु लो लागी, जैसे चंद चकोर।।[२२]

बाई मंदर में हिडोला रचती, झांकियां करती, कथावां के'ती, धुन लगावती, गाती अर नाचती। राधा–क्रिसन रो सुंदर, नेनां लुभावतो सिंगार वे'तो, ऋतुआं अर पर्व–ते'वारां रे माफक पूजन, प्रसाद रा अलबेला आयोजन वे'ता रे'ता। नगर अर आस–पास रो जन–मानस गिरधर री जुगल छबि रा दरसन अर बाई रा आशीर्वाद लेई–लेई ने धन्य वे'तो रे'तो।

जन–जन री या भावना दन–दन जोर पकड़ती गी के मीरा गवरी रे रूप में अवतरित वी है। या तो वागड़ भोम री मीरा इ'ज।

गवरी बाई री समान दृष्टि अतरा तक आगे बढ़ गी ही के श्रीक्रिस्न रे सिवा वणां उनचालीस कीरतन श्रीराम उं सम्बन्धित, तीन श्री भोलानाथ रा अर श्रीडाकोरनाथजी ने भी सुमिरण करणो नीं भूल्या–

...महीमा तेरी कही न जाय, रंगीला रणछोडराय।
गवरी दास कहे भव बंध थी छोडाइ।।

अर–

...राजीव लोचन रामचंद्र ओर, राधारमण रट लीजे।
रणछोड रावण के जो रीपु, रंरंकार रस पीजे।।....

---

२१. पद संख्या २१ (संग्रे' : गुजरात वर्नाक्युलर सोसाइटी)

२२. पद संख्या ६८ (वही)

अद्वैतवादी बाई परमातमा ने सर्वव्यापी मानता, के'ता–'वो एक तो भी अनेक अर अनेक तो भी एक, नागरभक्त नरसी मे'ता रा सुर में सुर मिलावतां कीरतन कर उठ्या–

...अष्ट कमलदल फुले सार, आतम निज करे क्रीड़ा अपार
सुरत निरत धरी देखो मुजार, भमर करे शब्द गुंजार
अनहद शब्द बाजे जहां तुर कोइ पहोंचे विरला शुर
गोप–गोपी मीली होरी गाये, जहां मनसा मेरी रही लुभाये
दिन–दिन बढ़ी है अधीक प्रीत, वहां नाहीं रहीवे कुछ बी रीत
वरणा व्रण का टल गया भान, एक लीन भइ गोपी कान
माया, मोह दीसे नहीं कोय, जीत देखुं तित हरी–हरी होय
गवरी दिया परदा कुं त्याग, ग्यान गुलाले खेलत हे फाग

यो सब कदी वे जदी के–

काम–क्रोध से चदृर भइ मेली, साधन के संग जा कर धोइ।
सील–संतोषे अग्नी निर्मल होइ, राजस तामस रजजारी खोइ।
–झुठी मोह माया जग झुठो, छोडा उनका कुसंग।
सत को चलण ओर वलण सत को, सत को कीयो हे संग।।
परनिंदा ओर परपंच परहरी, जार दीया पाप पंक।
सब घट देखा अंतरजामी, अवीनासी बहु रंग।।
विषय स्वाद कुं विषरूप जानी, न्यारी रही निसंक।
साचो संग सामला को लाग्यो, जेसो हे चोल को रंग।।
बाई ने गोपाल रो 'भरूसो भारी'हो तो 'कहा करे संसारी',
भले ई कोय बुरी कहे, कोय भली कहे, कोय गाली दे.....[२३]

गवरी बाई ने पूरो विस्वास हो के–

––प्रीत पुरवनी पेली छे रे, आज क्यम मुक्यां वीसारी।

––प्रीत पुरवनी पालो रे।

––गवरी ने गिरधारी मलीया, कछु पुरव का लेख।

––गवरी ने गिरधारी मलीया, प्रीतडी हती एतो पहेली रे।

---

२३. पद संख्या ४४५ (वही).

तो भी मन घणों चंचल; मन ने बाई 'मन–मेवासी' 'मन मार्जारी' कह्यो–

–मनुवा मेवासी, तुम कहो फिर कर, कुन हो, कांहां, अब जासीरे।

हूं ते कुन, कहां से आयो......[२४]

–अब मन माजारी कूं मारो, गाफल पर्योग्रभ के गारो।

जीम्या इंद्री के स्वाद से प्राणी, भूल्यो सब जुग सारो।। [२५]

उपरोक्त रूपक देखतां ई वर्णे। अणां परब्रह्म–प्राप्ति रे वासते चित्तशुद्धि, सतसंग, संयम, स्वाध्याय, नाम–जप, ध्यान आद [२६] आवश्यक सोपानां रो विस्तार उं विचार कीदो है–

१. चित चेतन को अंग

गवरी चित में चेतिए, लालच लोभ निवार।
सील संतोष समता ग्रहे, हरि उतारे पार।।
गवरी चित्त तो है भला, जो चेते चित मांय।
मनसा, वाचा, कर्मणा, गोविंद का गुन गाय।।

२. हिरदा- शुद्धि को अंग

लोटत, मुंडित बहु देखिये, सन्यासी धरे जोग।
हिरदा शुद्ध किया बिना, सब ही जानो फोक।।
अडसठ तीरथ में फिरे, कोई वधारे बाल।
हिरदा शुद्ध किया बिना, मिले न श्री गोपाल।।

३. सतगुरू-कृपा को अंग

जप तप किये हरि ना मिले, पूरन परिब्रह्म राय।
सतगुरू की किरपा भये, हरि स्हेजे मिल जाय।।
बावन अक्षर बाहिरो, पहूंचे ना मति दास।
सत गुरू की किरपा भये, हरि पेखे पूरन पास।।

---

२४. डॉ. अंबाशंकर नागर : गुजरात के संतो की हिंदी वाणी (गवरी बाई : पृ. २३६)

२५. वही (पृ. २३४)

२६. पद संख्या ३६६, ३६८ (संग्रे' : सोसाइटी)

४. मिथ्या-आचरण को अंग

बन में गये हरि ना मिले नरत करी नेहाल।
बन में तो भूकते फिरे, मृग, रोझ, सीयाल।।
दरी में तो बहू दिन बसे, अहि उंदर परमान।
दरी समारे ना मिले, सुनियो संत सुजान।।

५. गोविन्द-प्राप्ति को अंग

गोंविन्द किस विध पाइये, नन विषया संग राच्या।
आस करे प्रभु मिलन की, मन माया में नाच्या।।
छापां तिलक बनाय के, परधन की करे आसा।
आत्मतत्व जान्या नहीं, इन्द्री–रस में माता।।

कीरतन माला रा मणिया [२७] संख्या ३६६ उं ४०१ तक में जद्यपि 'साखी' शीर्षक नीं मिले पर वणां रो वर्गीकरण ऊपर मुजब कियो जाइ सके। पदां रे लारे–लारे बाई गवरी री रची साखियां उपदेशां रो खजानों ई।

'साखी' शब्द रो अरथ 'साक्षी'। जी स्वानुभूति साधक ने स्वयंमेव अनुभूत व्हे अर पछे वो वर्णी ने दोहामयी शैली में व्यक्त कर दे, वा रचना 'साखी' के' वाय। साखी रो सरूप अर निरूपण बीचे मुजब––

साखी आँखी ज्ञान की, समुझि देख मन मांहि।
बिनु साखी संसार का झगड़ा छूटत नाँहि।।

विदुषी कवयित्री बाई गवरी ने मध्यकाल रा राजस्थांनी दूहा साहित में दूहाकार रे रूप में भी उल्लेखित कियो गियो है। [२८]

राजस्थान अर पास रा गुजरात खेतर में अणां री रची साखियां वात वात में रेजगारी जूं चालती रे तो अणां रा रचिया पद घणांई चाव उं गांया जा'वे। पद तो गावा रे वासते घणाई मोजू। अपढ़ ग्राम्यां री जन–जन री जिह्वावां पे बाई रा सरल पद नाचता रे तो थोड़ा–घणां पढ्या–लिख्या रे कंठा रा सिणगार वणता आदर–सनमान पावता रे। बाई ने हीरा, माणक, मोती अर संसारिक वैभव कई' नीं चावे, वणां ने तो आपणे आराध रे दरसन री पिपासा है–

---

२७. अणीं बारा मांय दृस्टव्य : परिसिस्ट (५)' गवरी कीरतन माला रा मणिया''

२८. डॉ ओमानंद रू. सारस्वत : मध्यकालीन राजस्थानी दोहा साहित्य (राजस्थानी साहित्य का मध्य काल : संपा. डॉ. नारायणसिंह भाटी : 'परम्परा' शोध पत्रिका भाग १५–१६, पृ. १५८)

प्रभु मोकूँ एक बेर दरसन दइये।
तुम कारन मैं भई रे दिवानी, उपहास जगत की सहियै।
हाथ लकुटिया कांधे कमलिया, मुख पर मुरली बजैयै।।
हीरा, मानिक गरथ भंडारा, माल मुलक नहीं चहियै।
गवरी के ठाकर सुख के सागर, मेरे उर अंतर रहियै।। [२९]

बाई री मनमोवनी कीरतन शैली रे लारे, अणां रो संगीत–शास्तर रो ग्यान भी कम नीं। यी आछी गायिका भी ही। अणां रे पदां रे लारे विविध राग–रागिनिया [३०] रो उल्लेख भी मिले, जणीं–जणीं में ई आछी तरांउं गाया जाइ सके–प्रभाती, वसंत, सांरग, मलार, भैरव, खमायची, धमाल, कल्याण, जेजेवंती, पुरवी, मारू, गोडी, आसावरी, रामकली, टोडी, ललित, काफी, सोहेणी, धनासरी, सोरठ, देवगांधार, नट, विलावल, विभास, मेधमलार, धोल, कानड़ो, वेहागडो, मेवाड़ो आद।

कतराई पदां पे 'गरबी' शीर्षक मिले। 'गरबी' कोमल–कांत–पदावली उं युक्त एक असी गेय रचना व्हे, जणी में काव्य–कार री अन्तश्चेतना साकार वेई उठे। गरबियां विभिन्न लोक धुनां अर तालां में ढली व्हे। गरबी गुजराती साहित री आपणीं मौलिक विधा है, जणी'रे माध्यम उं गुर्जर अंचल रा कतराई प्रतिभावान कवि हृदयां आपणीं वाणी मुखरित कीदी। गुजराती अर वागड़ री महिलांवां हर उछव–ते'वार अर शुभ काम–काज पे गरबियां गायां करे। गरबी री धुनां, तालां अर भाव व्यंजनांवां अतरी लोक चावती, मन भावती वी' के भारत भोम रा दूजा अंचला तक में अणां रो अनुकरण कियो जावे।

अणां रा पदां में निरगुण भावना रे लारे राम, क्रिस्न, नटवर नागर आद नामां रा भी उल्लेख मिले पर लगभग सबी पदां में कवयित्री रे निरगुण भाव रो ही प्राबल्य नजरे आवे। निरगुण धारा रा कवियां में जो महतमय स्थान दादूपंथी संत सुंदरदास रो, वो इज स्थान निरगुण धारा री कवयित्रियां में विदुषी गवरी बाई रो, या अणीं री पूरी अधिकारिणी, [३१] अणी में दो राय नीं।

बाई रा अधिकतर पदां में गुरू अर नाम री मे'मा गा'ई गी है– –

गुरू परमात्मा, गुरू परब्रह्म, गुरू देवन के देव।
गुरू कल्पव्रक्ष, गुरू कामधेनु, गुरू की करीये सेव।। [३२]

गुरू री मे'मा अपरम्पार– –

---

२९. पद संख्या : ५५७ (संग्रे' : सोसाइटी)

३०. अणीं बारा मांय दृस्टव्य : परिसिस्ट (६) विविध राग–रागिनियां रा पद

३१. डॉ. अंबाशंकर नागर

३२. गुरू महीमा : पद संख्या ३८० (संग्रे : सोसाइटी)

हरी थी गुरू ने अधीक जाणवा, सुणो ने संतो भाइ।
हरी डारे संसार मा, सतगुरू लेत छोडाइ।। [३३]

गुरू–शिष्य रे में ते'तीस सवालां रे जबाबां रो नवनीत रूप सार कीरतन संख्या ४०२ में–

सवाल – उतम कीसकुं कहीये ?

जवाब – अपने आत्मा कुं चीने, अरू सब वस्तु को त्याग करें।

सवाल – तुरीया दशा किसकुं कहीये ?

जवाब – कैवल्य ब्रह्म अखंडानंद, अद्वैतमयी होवे, अरू द्वैतभाव कछु भासे नाही। तब ई –

सेवक स्वामी एक थाय, लुण नी पुतली सिंधुमांहे समाय।
उत्पती, स्थिति, प्रलय नाही, रवी–शशी की गम्यता नाहीं।

प्रश्नां रे उत्तराउं मन परसन व्हे, मनड़ा रा संदेह टले, अर पछे–

चिदानंद चिदरूप रे, हे सुपनवत संसार।
ज्युं दरपन मुख देखीये, साचो नहीं नीरधार।।

गुरू रे ग्यान, मरम अर ध्यान री प्रक्रिया समझाया के'ड़े गवरीबाई मांय योगी रो सुरूप प्रगट व्हीयो, राम–स्याम री एकता, अनुभूत वी सगुणी–निरगुणी, नाथ अर पुष्टि मारग सबी रो समागम, समन्वय अर सतसंग रो आदान–प्रदान रो परिणाम 'सुन्न समाधि' रो लागणों, बिना खायां–पियां, हिल्यां–डुल्यां थिर जड़वत् कतराई दिनां तांई–

सुन वे संत ग्यानी, को अनहद धुनी, गगन मंडल में बाजां बाजे, मुरली सुनी
प्राण कुं बंधकर, पवन बंध से लाया, चंद्र सुरज एकी घरू मिलाया।
गंगा, यमुना उलटी बही, झलक मोती घट में उजाला भया, झलहल ज्योति
पांचुं सखी अमीरस पीवे हिलमिली, मधुकर विलंब्यो हे, जहाँ कमल की कली
गवरी सतगुरू चरन ध्यान उनमुनी धरी, घट–घट सचराचर में निरखत हरी [३४]

(चन्द्र–सुरज=इड़ा–पिंगला नाड़ी, पांच सखी=पंचतत्व उं वण्यो सरीर, अमीरस=ब्रह्मरन्ध्र उं द्रवित व्हेवा वारो रस, उनमुनी = तुरियावस्था)

कबीर आद निरगुणी संतां द्वारा वर्णित 'सुन्न समाधि' री योग–साधना री याही'ज भासा। अणीं री पृष्ठभूमि तो–

---

३३. गुरू महीमा : पद संख्या ३८० (संग्रे : सोसाइटी)

३४. वही : (संग्रे' : सोसाइटी)

115856

मेरा मन, अब निरमल रे होइ।
काम, क्रोध कपड़ा भया मेला, सतसंग सरीता में धोइ।।
समरण साबु के, लपट लगाये, दुरमत डाघ, डार्या खोइ।
राजस, तामस, रज सब झाड़ी, सफेदी झलकी जोइ।।
दास गवरी कहे, सुनो भाइ साधो, हरी बिना दरस्या न कोइ। मेरा मन...

गवरी बाई रचित पदां पे संत कबीर, सूर–मीरा आद भक्त कवियां रो प्रभाव स्पष्ट। पर मौलिकता री कमी नीं। सहज सरलता, तन्मयता अर लय भरपूर। लय रे बिना तो कोई भी उद्‌गार काव्यमय कदी नीं वे'ई सके।

बाई गवरी रचित पदां री भासा राजस्थानी, जणी में गुजराती, ब्रजभासा अर स्थानीय डूंगरपुरी·वागड़ी) री यत्र–तत्र छाया स्पष्ट नज़रे आवे। थोड़ा'क शब्द संस्क्रत रा भी मिले।

गवरी बाई रा पदां ने सबां उं पे'ली प्रकास में लावा रो श्रेय मुबंई रा 'गुजराती' पत्र रा मालिक (स्व.) श्री इच्छाराम–सूर्यराम देसाई ने, जणां 'व्रहत काव्य दोहन' रा भाग पे'ला में बाई रा ग्यारा कीरतन संकलित करतां भूमिका में संकेतात्मक रूप उं लिख्यो के 'गवरी बाई नाम की स्त्री कवी की हाल में खोज हुई है, उनके काव्य में ज्ञान और वेदान्त का सब वीषय है। [३५] अणी उं आगे विद्या विलासी श्री देसाई नीं बढ़्या।

मुरेब्बी क्रष्णलाल–मोहनलाल झवेरी बाई रे बारा में कें–"....विवाह के पीछे थोड़े दिन बाद उसके पति का म्रत्यु हुआ इसलीये उसने ईश्वर कुं ही अपना पति माना,परिश्रम से लिखना बांचना सीख के उनोने भागवत और तत्वज्ञान के पुस्तक का अभ्यास कीया ज्ञान और वैराग्य उनकु प्राप्त हुआ था और समाधि चढाना जानती थी उनकी साधुवृत्ति के लीये डुंगरपुर जैपुर और काशी के राजाओं की नजर उनकी तरफ गइ थी अपनी भूमी छोड के वो काशी जा के ठेरी थी और वहां (?) उनका भी म्रत्यु हुआ स्त्री कवि में वेदान्ती कवि वो एक ही है और पुरूष वेदान्ती कवि में अखा की साथ उनकुं रख्खे जाय, लेकीन उनकी शब्द रचना अखा की शब्द रचना से सुगम, मूर्ख भी समज सके एसी, परब्रह्म की विश्व में व्यापकता का द्रष्टांत देने पर 'फुलन की बास' और 'सूरज में तेज' की उपमा दे के वो समजाते हैं गवरी बाई ने करीब–करीब ६५२ कीर्तन बनाये हे।" [३६]

---

३५. वाणी : गवरी कीर्तन : माला : संपा. 'मस्त' प्रका. कमलाशंकर–गोपालशंकर भचेच संवत् १९९४ (ई. सन् १९३७) : भूमिका भाग पृ.१२

३६. गुजराती साहित्य ना मार्ग सूचक स्तंभो, पृ. १७७

बाई रे बारा में विद्यागौरी–नीलकंठ रा विचार भी महतमय–"....ईश्वर मेरा पति हे ऐसा भाव उनमें उत्पन्न हुआ. आप प्रवीण थी इसलीये पढ़ना–लिखना सीखी और भागवत गीता वगैरा सुनने लगी. ईश्वर भक्ति में उनका चित्त दिन व दिन दृढ होने लगा. अपना सब समय वो ईश्वर भजन में पसार करती थी. शनैः शनैः संत समागम से उनमें ज्ञान वैराग्य बढे. लंबे काल तक वो समाधि में ठेर सकती एसी मानसिक शक्ति उनो ने प्राप्त करी थी. वो लालजी कुं पुजती थी. संसार में उनकुं कुछ भी मोह न था उस समय के गिरपुर और जैपुर और काशी के राजन भी उनके दर्शन करने कुं आते थे डुंगरपुर से काशी जा के वो ठेरी थी और वहां ही (?) देह–त्याग कीया था।[३७]

उनके ६५२ कीर्त्तन की हस्तलिखित प्रत हे. लेकिन उसमें के बहुत ही थोड़े छपे हुए हे. कृष्ण बाल लीला और शीवस्तुति के कुछ हे और बहुत ब्रह्मज्ञान के हे...... ....अद्वैत मत का समर्थन कीया हे और उपदेश भी हे दूसरे काव्य में उनकी कवित्व शक्ति दिखी जाती हे उनकी भाषा संस्कारी हे.और थोडे काव्यरस के सुंदर वाक्य एसे हे जो दूसरी स्त्री कवि में मालूम होते नहीं.....बचपन में से वैधव्य दशा आइ तो भी गवरी बाई ने अपना जीवन बरबाद न कीया लेकीन सार्थक कीया. और अपना नाम अमर कीया हे इहलेख की स्त्री कवि में वो सर्व से संस्कारी थी और उनका ज्ञान सबसे श्रेष्ठ था।"

स्व. अचरतलाल–मणीराम भचेच रे अनुसार–"......गवरी बाई के पदों में श्रृंगार रस कदाचित हे थोडे क्रीश्न की बाल लीला के और थोडे शीव के हे और सब वेराग्य रस के, ब्रह्म और आत्मज्ञान के उच्च दर्जे के नीति से भरपूर हे,.........वो गवरी बाई रजवाड़ा की रहने वाली होने के लीये कोई शब्द वो देश के वा खास करके गिरपुर (डुंगरपुर) के मालूम होते हे और कोई शब्द संस्क्रीत भी हे, लेकिन विद्वान आदमी समज के पढेगा तो समजे बीना न रहेगा......बाई महायोगी, विद्वान बहुत श्रुत, ज्ञानी, कवि और ईश्वर के सच्चे भक्त थे, वो थे तो वैश्नव लेकीन उनका ज्ञान बहुत ऊंचा था खास करके वो एक, अखंड, अद्वैत, प्रिब्रह्म परमात्मा कुंई मानते थे, और दूसरा सब उसकी रचना हे एसा मानते थे।"

जाणकारी में आयो के श्री अचरतलाल भचेच संवत् १६३८ (सने १८८२) में 'श्री गवरी बाई नुं जन्मचरित्र' नाम री पुस्तिका छपवाई ही, जर्णी में वणां लिख्यो के–'ईश्वर अनुकूल होगा तो उसका (गवरी बाई का) सब पद्यसंग्रह सचित्र सचरित्र सुज्ञ स्त्री पुरूषों की सामने रखा जायगा।' श्री अचरतलाल ने गुजरात वर्नाक्युलर सोसाईटी से

३७. 'गुजरात नी स्त्री कविओ'.

बाई के बनाए हुए पदों का संग्रह का बालबोध लीपी में लिखा हुवा, एक पुराना पुस्तक प्राप्त कीया. और वो तमाम पुस्तक अपने हाथ से गुजराती लीपी में लिख लिया.... 'श्री भचेच अचरतलाल ने आपणी पुस्तिका में लिख्यो के–'ये पुस्तक के आगे के और पीछे के पन्ने नहीं थे, इसलीये वो कहां कब लिखा गया और किसने लिखा वो मालूम पड़ता नहीं लेकीन उसके कागज स्याही और लिखे हुए अक्षर पुराने हे, इस कारण मेरा अनुमान हे, की वो पुस्तक गवरी बाई की हयाति में गिरपुर (डुंगरपुर) में लिखा गया होवे, उसमें ६५२ पद हे।' [३८]

अे'मदाबाद री गुजरात सोसाइटी रे संग्रेहालय मांय 'गवरी कर्तन माला' नामी हाथ री लिखी पुरांणी पोथी है जर्णी में ६०३ पद है। शोधक 'मस्त' री प्रति मांय कुल पद ६१० है। अंत में 'अपूर्ण संपूर्ण' लिख ने 'फालतू' शीर्षक दे'ई ने दो स्तवन ओर देई राख्या है, जणां में 'गवरी' शब्द रा प्रयोग नीं। पद क्रम ६०४ उं ७ 'गवरी बाई नुं जीवन चरित्र' में उं अर बाकी रा पद स्व. गोविंद कुंवर उं एक, स्व. गोपालशंकर उं दो संग्रेहित है। अणां पदां रे अलावा ओर पदां री संख्या कतरी'क है, यो केणों मुस्कल है।

बाई लोक–सेवा रो काम लोक–भाषा में कीदो। तत्सम्ये लोगां में जा शब्दावली बोल–चाल में ही; वणी रे' इज सहारे आपणे ह्रिदया री वातां कही। भाषा शुद्ध है या मिली–जुली यो सवाल वणां रे साम्हे हो ही'ज नीं। असल में भाषा भावां–विचारां रो वाहन ही, के'वा वारा री वात सुंणवा वारा समज ले, बस। बाई गवरी आपणां पदां रे वासते जन–जन री भाषा लीदी अर वर्णी में इज आपर्णी अनुभव–स्मृद्धि समाज ने अरपण कीदी। अबे गवरी बाई रा रच्या पदां में शब्द आद में बदलणो वणां री वाणी रो द्रोह ही करणों केवाय। बाई री आत्मानुभूति री दिव्य वाग्धारा में कठे ई रदो–बदली करणी तो अनधिकार चेष्टा ई'ज। बाई री वाणी अनगढ़, ऊबड़–खाबड़, छंद–तुक विहीन जसी भी है वा आपणें प्रकृत रूप में ई अलबेलो आनन्द रो अमरत पावा वारी।

ठीक ई कह्यो गयो हे के भारत भोम रा सबी संत एक ई ज्ञान–गोदड़ी रा धागा। जी नामदेव, वी ई कबीर, जी नानक वी ई अरवा अर गवरी। अस्यो मालम पड़े के मध्यकाल में आरवा'ई देस में ज्ञान री गोदड़ी बिछी ही। छोटी उं छोटी जगा तक में अणीं गोदड़ी में छिप्यो कोई न कोई रतन अर मणि–माणक अवश ई। एक भी गांम अस्यो नीं जठे खुदा री तरफ़ उं खबरदार करवा वारो नीं भेज्यो ग्यो व्हे। [३९]

वास्तव में सबी संत–भक्त तो समाज रा सजग पे'रेदार। आतम–साधना रे लारे–लारे सेवा रो जबरो काम। दक्षिणी राजस्थांन रा सुदूर अंचल वागड़ में जन–जन रा हृदयां पे बाई री वाणी री अलबेली बौछार वी। बाई गवरी ज्ञाने घेराणीं तो ज्ञानघटा

---

३८. (स्व.) अचरतलाल : गवरी बाई और गवरी बाई के कीर्तन पर अभिप्राय रे आधार पे लिखित।

३९. 'व इम्मिन् उम्मिन् इल्ला ख़लाफ़ीहा नज़ीरून'

उमड़ी, घुमड़ी अर घनघोर वरसी। खेतर रा दादुर–मोरां तक आतम–विभोर वे'ई ने आपणों उल्लास उजागर कीदो। बाई गवरी रो रच्चो एक–एक पद तो जाणें मो'र, जीं ने देस रा एक छोर उं दूजे छोर तक, जठे ई जी' वे वठे भुनाई लां। गवरी बाई रा सैकड़ा पद तो देस री अमोलक धरोहर।

बाई ब्रह्म रे सगुण–निरगुण सरूप री खटपट में नीं पड़ने खास तर्कातीत आतमानुभूति अर ब्रह्मज्ञान री लौ री लगन में'ई आगे बढ़ता रिया। ब्रह्म तो अखंड, अविनाशी, अजन्म्यो, अव्यक्त, अविकारी, निरलेप, निरालंब, निराधार, निरगुण, निराकार अर नित्य वणीं ने आपणें घट में ई खोजणों अर वणीं उं एकता थापित करणीं–

तव तन में जु ब्रह्म है मन
दूर निहारत तेथु नहीं पायम्
समझत क्यों नहीं मरम।

'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या' रे रूप में गवरी बाई जगत ने मृगतृष्णा अर सपनवत् बतायो–

या जग सकल सुपनवत मानं मृगतृष्णं देख्यं।

अणीं ज तथ ने संतकवि अखा 'रव–कुसुम' रो उदा'रण देता समझायो– 'आलम फूल आसमान का खिले खर जावे।' माता ओंकारेश्वरी [४०] अणीं झूठी दुनियां उं भागवा ने के'–

जागंदा ! झटपट जागो, झूठी दुनिया से भागो।

जीव ने भरमावा वारी माया–ठगनीः अणीं में लिपट जावा वारा नर री गत पे बाई गवरी कह्यो–

गवरी गिरधर कुं तजी, माया में लपटाय।
ते नर थोरे दिन में, बाँधवा जमपुर जाय।। [४१]

दादूदयाल माया रूपी बेलड़ी रा जे'रीला फलां ने चाखवा उं वचवा री वात कीदी है–

माया बेली विषै फल लागे, ता परि भूल न भाई।

साई' रो संग करवा उं माया उं पिंड छुड़ायो जाइ सके–

---

४०. ओंकारेस्वरी रो मूल नाम ललिता हो। अणां रा पिता मंगल चौबीसा ब्राह्मण गांम सिसोदरा (भडौच) रा रे'वा वारा हा। प्राइमरी साला मांय प्रधानाध्यापिका ललिता रो मनड़ो मीरा री तरे' पारिवारिक जीवण री निस्फलता अर करूणता रे कारणे संसार सूं विमुख वेइ'ने वैरागोन्मुख वेइ ग्यो। संवत् १९८९ मांय रिसिकेस मांय अणां ने निखांण प्राप्त वीयो।

४१. पद संख्या ३९६ (संगे' : सोसाइटी)

जुगीया माया दुनी की देखत रंग पतंग।
अवर उपाये ना छुटणां एक ले साई का संग।।

—जगाजी महाराज

बाई गवरी ज्ञान रे लारे—लारे भगति ने भी स्वीकारे। अणां री भगति ज्ञाननिष्ठ भगति रो आछो उदा'रण। संत अखा रा शब्दां में—'भाई! भक्ति एहवी पंखणी, जेहने ज्ञान वैराग्य बेउ पांखं। ग्यान अर भगति रो अद्‌भुत मेल गवरी बाई री समन्वय—साधना रो घणोंइ उत्तम दृष्टांत। बाई री तपः साधना सहज, भावमय अर अंतरमुखी। गवरी री भगति में विरह री विदग्धता अर भगवत् प्रेम री मस्ती। मस्त बाई गवरी शास्त्रानुमोदित विधि—विधानां रा फंद में नीं फँस ने से'ज साधना रो मारग इ अपणायो, जणी'रे अन्तरगत बाहरी आडम्बरां ने छोड़ने आतमा ने से'ज रूप उं परमतत्व में निमग्न वे'वा रो शुभ ओसर मिले—

प्याला हरिनाम पी के, बावरी अब हो रही।
गवरी प्रेम रस में पगली, हरि चरन लग रही।।

बाई रो उद्देश्य तो परम तत री अनुभूति करणो अर करावणो ई। मोती बटोरवा वारा री तरां गे'रा पांणी में पैठवा री ओर इज बाई गवरी रो लक्ष रियो, वणां किनारे बिखरी पड़ी सीपियां ने अवेर वारी जरू'त ई नीं समझी। वी तो हृदे—सरवर में गोतो लगाइ—लगाइ नें राम—रतनां रे एकठा करवा—करवा में ई आपणी मूंगी मनरवा दे'ई ने सारथक वणां ई। वणां रा रच्या पदां, दूहा—साखियां रो महत्व रस, छंद, अलंकार आद में नीं। वेइ ने भावां री गे'राई, अर्थ गौरव अर लक्ष में जादा तथापि वणां में अणां उपकरणां री सर्वथा कमी भी नीं बाई रा पदां में रसानन्द रे लारे ब्रह्मानन्द घणों, अर ब्रह्मानन्द अनिर्वचनीय। बाई री मुक्तक रचनांवां मुख्यते शांत रस उं सराबोर।

गवरी बाई रा पद (कीरतन) तो आतमानुभूति री संगीत मय अभिव्यक्ति। अणां तो लोक—कठां पे थिरकती परम्परागत लोक धुनां—तालां रे अधार पे पदां, कीरतनां, भजनां, गरबा—गरबियां, रेखता आद री रचना करी।

राग सोरठ-ठुमरी

सामलिया तोरे सरने आये की लाज।
मैं अवगुनकारी, नागुन सागर, मेरा गुनाह बख्सो व्रजराज।।

अणां रे पाछे बाई गवरी रो उद्देश जन—जन ने जीवन उं विमुख करवा रो कदापि नीं। ग्यान या वैराग रो सद् उपदेस देइ ने जन—जन रा मन ने परमतत री ओर

उन्मुख करने, सद् आचरण रो पाठ पढ़ावणों इ'ज, अणीं अधार पे बाई गवरी रा रच्या पदां आद रो घणों इ महत्व। पदां री भासा सरल अर भावां सूं लबालव भरी। सबद–वे'वार मांय घणी कोमलता अर सुवाभाविकता, बाहरी आडंबर अर साब्दिक चतराई रा फेर मांय नीं पड़ने बाई गवरी सीधी बातां ने, तथां ने सीधा–सादा ढंग सूं कही, जी दिमाग रे पे'ली ह्रिदया ने छुवे। अणां रा पदां मांय जो रस हे, जो मीठो–सो दरद हे, वो साहिताकास रा 'सूर' तक मांय नीं नजरे आवे। अणींज वासते ही तो निस्ठुर काल रा थपेड़ा तक अणां रा रच्या पदां रे काव्य सौन्दर्य ने, वणां रे भावां रा असर ने मंद अर मलिन नीं कर सक्या।

बाई रे पदां मांय वणां री आतमा री भासा। पदां मांय भावां री पुनरावृति मिले। गवरी बाई उपासिका पे'ली, कवयित्री बाद में। आपणीं उपासना री धुन में, आपणीं पूजा–अरचना रे सब्द–सब्द मांय, आपणे ह्रिदया ने बार–बार रस मगन कर देणों चावे, जदी'ज एक–एक भाव ने बार–बार दोहराइने तक बाई रे ह्रिदया अर कानां ने तरपती नीं वे'ती दीखे।

बाई गवरी तो वागड़ भोमका मांय स्रोतस्विनी रे रूप में प्रकट व्ही ही, जणीं एक ओर तो वागड़ अंचल ने आपणें भगति प्रवाह सूं सजल–सरस कर दीदो तो दूसरी ओर अखिल देस रे नारी ह्रदय रो परम प्रभु रा चरणां मांय अनन्य प्रतिनिधित्व कीदो।

गवरी बाई नीं तो आपणीं जाति नागर ने छोड़ी अर नीं जाति वारा अणां ने छोड़या। सुफेद वस्तर धारी बाई, तुलसी री माला गलां मांय, गोपीचंदण रो तिलक ललाट पे, कणीं रे अठे नीं तो भोजन करवा जाता अर नीं जाति वारा रे अठे भोजन लेवा ने जाता पर जाति रे भोजन रे समय पेली पोत नूंतो बाई रे ठाकुर लालजी मा'राज ने दियो जातो। बाई बार–बार समाधि आवा केड़े अन्न लेणों बंद करने मातर दूद पे ई रे'ता हा।

संवत् १८६० मांय गवरी बाई मंदिर मांय ठाकुर जी रो दूजो सरूप प्रतिस्ठित करवाइने, वणां री सेवा–पूजा योग्य आदमी ने सोंप ने, आपणे 'लालजी' ने साथ लेइ ने गोक़ल–व्रन्दावन आद रे वासते रवाना वे' वा रो विचार कर लीदो। मा'रावल सा'ब ने खबर मिली तो मंदिर पधारिया, डूंगरपुर ही रे'वां री निवेदन करी पर बाई आपणें निस्चय पे कायम रह्या।

समाज संतां–भगतां रो नेचो लेतो रियो हे। डूंगरपुर छोड़्या पे जेपर रा मा'राजा परतापसिंग जी रा इस्टदेव गोविंददेवजी रो 'सरूप अर सिंगार कस्यो हे?' रो पडूतर देवा मांय लालजी भगतिमयी गवरी बाई री लाज राखी, के 'भगवान रे माथे मुकुट नीं।' जांच–पड़ताल पे तथ साम्हे आयो के मुकट धारण तो करवायो हो पर समयांतर मांय पाछे पड़ ग्यो। मा'राजा ने पस्चाताप वीयो, माफी मांगी। जेपर मांय ही ठेरवा री प्रार्थना

कीदी पर बाई आपणे कार्यक्रमां मुजब आगे बढ़्या, गोकल–मथरा–व्रन्दावन वे'तां कासी पोंच्या।

कासीराज सुंदरसिंग आछा विद्वान अर भगत। बाई री भगति, योग–साधना, काव्य–सक्ति आद सूं राजा सुंदरसिंग घणां प्रभावित वीया। कुछ चमतकार तक राजा रे अनुभव मांय आया। कविराजा सुंदरसिंग पद रच ने बाई ने सुणांवता 'अर बाई भी आपणां रच्या पद–कीरतन सुणावतां। सुंदरसिंग जी ने समाधि मारग वतावा पे दोयी तो गुरू–सिस्य री परिधि मां आइ ग्या। राजा घणों आग्रह करने बाई रे सामे पचास हजार रूप्या राख्या। बाई गया–सराध कीदो। कासी जी मांय वडनगरा नागर जाति रा आपसी झगड़ा, जाति रे दस्तूर मुजब भोजन कराइने मिटाया, जाति रे हर घर मांय पीतल रो एक बड़ो घड़ो अर एक अशरफी भेंट करी। पुरी री जातरा करने दान दिया। पछे बाई गवरी चतरीबाई, ‾मना बाई अर परभासंकर आद रे साथे कासीजी मांय रे'वा लागा।

समाधि तो गवरी बाई ने आयां ही करती। एक वख़त सात दिनां री समाधि रे के'ड़े चतरी बाई ने कह्यो– 'मारे नासवान सरीर ने छोड़ देवा रो समयो नजदीक ई हे, मूं गंगा माता रा पवितर तट जठे ध्रुवजी तपस्या कीदी, वठे जाइने, समाधि लेइने, रामनोमी रे दिन परभु मांय लीन वेई जाउंगी।'

या वात चतरां सुंदरसिंग जी ने अरज की दी तो वणां वतलायी जांयगां बाई ने लेजावाने पालकी रो बंदोवस्त करियो। बाई गवरी आसन लगाइ'ने समाधि [४२] मांय

---

[४२] जीवित (?) समाधि लेवा रे पे'ली बाई रामानंदी गुरू सूं दीयेलो बालमुकुंद लाल जी रो सरूप चतरां ने सुपरद करतां, भगवद् भजन करता रे'वा रो बोध दीदो। भगवद् भजम ई वा जड़ी बूंटी, जणी ने ले'यां केणे दुख–दरद नीं व्यापे।

गवरी बाई रे सतसंग सूं चतरां भी भगवद् भजन मांय चित्त लय करवा री सामरथ पे पोंच ग्या हा। थोड़ा समय तो यी सब कासी मांय ठेर्या; पछे ठाकुरजी रे लारे गोकल–विंद्रावन–मथुरा मांय कुछ वरस विताया। एक दिन पाछली रात जदी बाई चतरां ध्यान मगन हा, तो बालमुकंद फरमायो के 'आज सूं दो मी'ना बाद थारी नासवान दे' नीं रे'गा अणी वासते कासी जाइ नै मने मांझुकुंअर ने सुंपी दे।' वणां समये मथुरा मांय वडनगरा नागर ठाकुर नंदकुमार रे'ता हा, वणां ने बुलाइ ने सब वात वताई। कासी मांय वडनगरा नागर नवलराम दवे रे घरे ठेर्या, जठे माझुकुंअर पुत्र ब्रजलाल अर क्रीस्नलाल रे साथे आया तो चतरां बाई कह्यो के दे 'त्याग रो समयो नजीक हे, बालमुकंदजी री पूजा–अरचना स्रद्धा भाव सूं करजो।' बाई चतरां दे' छोड़वा रे सात दिना पे'ली डूंगरपुर–गिरपुर रा रे'वा वारा कासी जी मांय रेई रिया भट्ट गोपीनाथजी रे अठे भागवत सुणी अर पूरणाहुति पे साम का गंगाघाट पे, सनान–ध्यान करने, भजन गातां–गातां सुरग धाम ने प्रयाण करियो।

बालमुकंद जी रो सरूप थोड़ा समय माझुकुंअर रे पाठ–पूजा मांय रह्यो, पछे कासी जी मांय ही अेमदावादी गोस्वामी जी ने सेवा–पूजार्थ सुपरद कियो ग्यो, असी सुणवा में आवे।

लीन...ठीक दपरां रे समये वैकुंठ प्रयाण करियो...संवत् १८६५ चेत सुदी नोमी...पचास वरस री आयु मांय...नारी 'नारायणी' वण ने नारी गौरव अर आदर्स रो प्रतीक वणीं। वागड़ री धरोहर : गवरी; वड़नगरा नागर ब्राह्मण कुल री दीपसिखा : गवरी : दक्षिणी राजस्थान री नारी रतन : गवरी : भारत–भोम री नारी–सगति रो अलबेलो बिंब : गवरी : सगुण–निरगुण री मिली–जुली गंगा–जमनी : गवरी।

परिसिस्ट (१)

वड़नगर रा नागर ब्राह्मण वागड़ मांय....

उतरी गुजरात में आज रो बड़नगर आनर्तपुर* के'वावतों हो, जो गुजरात री घणीं पुरानी राजधानियां में उं एक हो अर जणीं री खास ख्याति ईसा री दसवीं सदी तक वणीं री। आर्य संस्क्रिति रो यो एक घणोंई पुराणों केन्द्र हो। गिरिनगर, कुश–स्थली, प्रभास, भृगुकच्छ अर शूर्पारक कुछ प्राचीन आर्य वस्तियां ही। (पे.१२)

गुजरात रा ख्यात नामा सम्राट् सिद्धराज जेसिंग (१०६४–११४३ ई.) पोस क्रिस्न तीज, संवत् ११५० ने सासन–भार संभाल्यो; वणां कोई पचास वरसां तक राज कीदो...... अणां सौराष्ट्र रा खेंगार ने हराइ ने मालवा ने आपणां राज में मिलायो। पाटण, सिद्धपुर, बड़नगर, खंभात, कर्णावती, बढ़वाण अर डभोई उन्नत नगर हा। (पेज.१६).
.... गुजरात रा राज मंतरी खास तौर उं या तो वड़नगर रा नागर वे'ता या जैन (पे. १७)..... वड़नगर रा सुसभ्य अर सुसिक्षित नागर ब्राह्मण, गुजरात रे इत्यास रा प्रमुख, सैव हा। चालुक्यां रा राज–प्रो'त वड़नगर रा एक ब्राह्मण हा। नागर ब्राह्मण प्रो'त जोधा अर विद्वान (पे.२०)..... जन–जीवण ने आणंद–उल्लास.... पर सन् १२६६ में मुसलमानी हमला अणीं ने ऊजाड़ दीदो अर अणीं री गौरवसाली बहु क्षेत्रीय परम्परा रो नास.... आखरी वघेला सासक कर्ण जणीं ने खिल्जी अलाउदीन १२६७ में अविजित कीदो। गुजरात री सुतंतरता छीन गी अर कोई एक सौ वरसां तक दिल्ली रा सुलतानां अणीं पे राज कीदो। विदेसी हमलां रे कारणे दिल्ली रा सुलतान कमजोर पड़ गिया अर गुजरात रो मुसलमान सूबेदार जफर खां गुजरात रो सुतंतर सुल्तान वण बैठ्यो (१४०७ ई.) वणीं दांण घणीं गड़बड़ मची। धरम–बदली, लूट–खसोट अर मंदिरां ने तोड़वा री घटनांवां बरोबर वे'ती री। लोग एक जायगां उं दूजी ठोर जावा ने त्यार व्िया। (पे.२१)

---

* कणीं दांण उत्तर गुजरात अर सौराष्ट्र री राजधानी कुशस्थली ही अर यो प्रदेस 'आनर्त' केवावतो हो। समयांतर में 'आनर्त' शब्द उतर गुजरात रे वासते काम आवा लागो, जणीं री राजधानी आनन्दपुर अथवा वड़नगर ही। जुदा–जुदा समयां में आनर्त, अर्बुद, सौराष्ट्र, कच्छ, शूर्पारक, नासिक्य आद भिन्न–भिन्न अंचलां रे वास्ते 'अपरांत' शब्द काम में आवतो, जणीं रो पुराणों अरथ हो–'पच्छिमी तट री भोमका'। (पेज १) : [उपरोक्त सारी सामग्री जयंतकृष्ण–हरिकृष्ण दवे रे 'गुजराती साहित्य का इतिहास' प्रथम सं. १६६३ हिंदी समिति, सूचना विभाग उत्तर प्रदेश, लखनऊ सूं राजस्थानी में अनूदित.']

परिसिस्ट (२)

वड़नगरा नागर ब्राह्मणां डूंगरपुर छोड़्यो...

महारावल सिवसिंग जी रे केड़े मा'रावल वैरीसाल अर तत्पस्चात् अणां रा उत्तराधिकारी फ़तेसिंग वि.सं. १८४७ (ई. सन् १७९०) में राज सिंगासन पे बैठ्या। अणां रो परलोकवास वि.सं.१८६५ (ई. सन् १८०८) में व्यिो।

वि.सं. १८६२ (ई. सन् १८०५) मांय मराठां री सेना सदासिवराव [†] री अध्यक्षता में वागड़ में आयी अर राजधानी डूंगरपुर ने चार'ई आड़ी सूं घेर लीदी; सामनो करवा रो साहस नीं; मराठां रा हमला खेतर–विजय री बनिस्पत खासतौर उं धन–अपहरण रे खातर जादा व्हेता रे'ता हा। जठूं धन मिल जातो तो वी वठूं चालता वणता। दो लाख रूप्यां पे पाछा फिरवा रो फैसलो व्यिो पर राज रो खजानो तो खाली। मंतरी मंडल अणी रो साधन निकाल्यो। अठा रा नागर वड़नगरा ब्राह्मण घणांई धन–संपन्न। वणां उं या रकम जोर–जबरन वसूल कीदी गी। मराठा चालता वणिया पर लारों–लार या कामधेनु भी डूंगरपुर सूं चालती वणीं। नागरां ने अणी तराउं रकम वसूल करणों घणों अखरियो अर वणां दृढ़ संकलप लीदो के अस्या राज मांय रे'णों ई नीं। लगभग सात सौ घरां रे ताला जड़ी ने वणां री कुंचियां रा झूमका मा'रावल रे सामे पटक ने कई एक एमदाबाद अर कतराई वांसवाड़े परा ग्यिा, जठे ई अवार तांई डूंगरपोर रा नागर केवा वे। (मातृभाषा का लघुसेवकः एक ब्राह्मणः डूंगरपुर राज्य का इतिहास (उतरार्द्ध) प्रथम संस्क. संवत् १९७९, सन् १९२२ पृ.७–८/ओझा : डूंगरपुर राज्य का इतिहास प्रथम संस्क. वि.सं. १९९२ पृ.१४० रे आधार पे रूपांतरित)

[†] यो इ'ज सदासिव डूंगरपुर, गलियाकोट आद में लूट मचातो जदी भगवान् रिसमदेव रे केसरियांजी तीरथ धाम पेंच्यो अर मंदिर रे नीचे री वेदी रे पां ऊबो वे'इ ने एक रूप्यो परभु रे साम्हे फेंकतां अभिमान में चूर वे'तो बोल उठ्यो–'यदि तू सच्चा है तो मेरा यह फेंका हुआ रूपया स्वीकार कर ले।' के'वे के फेंक्यो वो रूप्यो पाछो आइ ने वणीं रे माथा पे अतरा जोर उं लाग्यो के रगत टपकवा लाग ग्यिो। फेर भी वो नीं समल्यो अर सेना ने मंदिर लूटवा रो हुकम दीदो तो मंदिर में उं भमरां रो समूं उड़ने टूट पड़्यो तो वो अर वणीं री सेना बो'त सो माल मंदिर में ई छोड़ ने भागा अर पछे कदी नीं आया–

सुनिये रे वातां राव सदा शिव, मत चढ़ जाना धुलेवा।
गढ़ पति उनका बड़ा अटका, मत छेड़ो तुम उन देवा।। (भजनांस)

(अणीं बारा मांय विसेस विवरण रे वासते दृष्टव्य : आपके अपने गीत : प्रो. मथुराप्रसाद)

परिसिस्ट (३)

स्वामी रामानंद अर वणां रो सम्प्रदाय

रामानंद (१३३०–१४४५ ई.) रो आविर्भाव श्री वैष्णव सम्प्रदाय रा प्रवर्तक वैष्णवाचार्य रामानुज (१०१७–११२० ई.) री परम्परा में व्यिो।

सतंमत वैष्णव धरम री ही एक साखा, जा देस काल जन्य स्थितियां रे प्रभाव सूं एक अलग धारा रे रूप में वे'वा लाग गी। यो इज कारण के कुछ खास फरक रे बावजूद, दो'ई परम्परावां मांय घणीं–खरी वैचारिक समानता है। घणां लोगां ने साकार रा उपासक वैष्णवां अर निराकार रा ध्याता संतां रे मत मांय अन्तर विरोध दिखलायी पड़े पर वणां री या धारणां सर्वथा भ्रांत ही। वस्तुतया संत मत रा बीज वैष्णव धरम मांय कणीं न कणीं रूप में बो'त पे'ला ई वर्तमान हा, जी परिस्थितियां रे प्रसाद सूं अंकुरित अर पल्लवित व्यिा। जद्–जद् दूजी साधनांवां रा छींटा अणां पे पड़ता रिया तो वी आपणें मूल सूं थोड़ा'क अलग रूप मांय आपणें साम्हे आया।

स्वामी श्री रामानंद जी रो जल़म प्रयाग मांय एक कान्य कुब्ज ब्राह्मण रे घरे सन् १३३० में व्यिो। पेलां ई रामानुज सम्प्रदायी वैष्णव हा। एक दांण यी तीरथ जात्रा करतां जुदा–जुदा जायगां रो भ्रमण कर'ने जदी आपणे मठ पे पाछा आया तो अणां रे सम्प्रदाय रा दूजा वैष्णवां कह्यो– 'दूसरां रे साम्हे भोजन पावणों रामानुज सम्प्रदाय री रीति–नीति रे खिलाफ़ है। तीरथ जात्रा मांय अणीं नेम रो पाल़ण नीं कीदो वे'गा अतः मां आप रे साथे भोजन नीं कर सकां। अणीं तराउं बहिस्कृत व्हेवा पे अणां ने जबरो दु:ख वेणों सुवाभाविक ही हो। यी वणीं समये कासी चला आया, जठे अणां रे वासते सिस्यां एक मठ वणवायी दीदो, जणीं ने समयांतर मांय कणी' मुसलमान सासक नस्ट करवायो, वठे एक वेदी' ज सेस रे'ई गी। जणीं पे स्वामी रामानंदजी रा पगल्या अंकित है।

स्वामी जी श्रीराम रा अनन्य भक्त हा अर वणां री' ज भगति रो उपदेस देता रे'ता। यी सिद्ध भगत हा। स्वामी रामानंदजी बड़ा ई पराक्रमी अर सास्तरां रा मर्मज्ञ हा। अणां जैनियां, अद्वैतवादियां अर मुसलमानां रे साथे कतरी'इ जायगां सास्तरार्थ कीदो हो। अणां दक्सिण रे आचार्यां रे मत ने जादा सार्वजनिक सरूप दे'इ ने उत्तर भारत मांय प्रचल़ित करवा रो विसेस स्रेय प्राप्त कीदो।

अणां रा कतराई सिस्य वण ग्यिा। समय रे बहाव रे लारे अणां रो सुतंतर सम्प्रदाय

ई चल पड़्यो जो रामानंदी या रामात् सम्प्रदाय रे नाम सूं विख्यात व्यो। यी सब जाति रा लोगां ने उपदेस देता पर वर्णाश्रम री मरजादा ने भी मानता।

अनन्तानंद, कबीर (१३९८ई–१५१८ई), नरहरी, रैदास, करमचंद आद अणां रा प्रधान सिस्य हा। उतर प्रदेश मांय अणीं सम्प्रदाय ने मानवा वारा हज़ारां लोग आज भी मिले।

परिसिस्ट (४)

'अखा' परम्परा रा संत हरिक्रिस्न (स्वामी सहजानंद)

गुजरात री ग्यानमारगी संत परम्परा रा प्रतिनिधि अर जान्या–मान्या संत अखा गुजरात अंचल रा कबीर जणां रो जीवण समयो संवत् १६३० सूं १७१५ तांई मान्यो जा। अणां रो जलम अेमदाबाद रे पास रा गांम जेतलपुर रा सुनार परिवार में व्यो। यो परिवार वैष्णव धरम री मेवाड़ी साखा ने मानवा वारो हो। अखा रे पिता रो नाम रहियादास। जलम रे थोड़ा'क दिनां केड़े ई, अणां री माता रो देहावसान वेई जावा उं अणां रो बालपणों सनेह रा अभाव में वीत्यो।

अखा–प्रणालिका, रा पे'ला संत लालदास परम हंस केवाव ता अर अवधूत कोटि रा पोंच्या संत हा। कुछ अणां ने मातमा कबीर रो अवतार तक के', अणां रो जीवण सम्यो सम्वत् १७१० सूं १८०० विक्रमी मान्यो जा। यी जात रा छींपा भावसार हा अर गुजरात रे वाडाशिनोर तालुका रे वीरपुर गांम में जलमिया हा। कहानवा राधनपुर (उतर गुजरात) रे संता री परम्परा अणां उंज चाली। अणां आपणी' रचनावां में गुपत रूप मांय संत अखा रो उल्लेख घणां ई आदर रे लारे कीदो है–

'अरवा गुरू चरण प्रसाद थी, एम कहे सेवक लालदास'

अणां रे सिष्यां मां'य हरिक्रिस्न[†] मा' राज अर लूनावाड़ा रे शिमलिया गांम रे रे'वा वारा जीवणदास ब्रह्मग्यानी (संवत् १७५२–१८४० वि.) खास हैं। संत लालदास रे लारे अणां दोई सिष्यां रे वाणी रो संकलन सागर मा'राज 'संतों नीं वाणी' में कीदो है।

[†] श्री हरिक्रिस्न मा'राज (स्वामी सहजानंद) रो जलम अजोध्या रे पास छपैया मांय सन् १७८१ ई. में व्यो। ग्यारा बरस में यी सात बरस री तीरथ जात्रा पे निकल्या। अणां स्वामी रामानंद उं दीक्षा लीदी, जणां अणां ने उद्धव संप्रदाय रो आचार्य व्हेवा अर वणी' रो प्रचार–प्रसार करवा रो आदेस दीदो। यी सौराष्ट्र, गुजरात अर कच्छ मांय २८ वरसां ता'ई उपदेस करता रिया। अणां विधवावां री सती परथा वंद करवायी, अंध विस्वासां ने नीं मानवा रो उपदेस दीदो। कुछ अपराधी जात्यां ने सभ्य वणावा रो काम कीदो। दार्सनिक क्षेत्र में यी रामानुज रे विसिष्टाद्वैत मत ने मानता पर सेवाक्षेत्र मांय अणां पुष्टि मारग ने ई स्वीकार्‌यो। अणां २१२ पदां मांय 'शिक्षापत्री' री रचना करी अर 'वचनामृत' लिख्यो, जणीं में २६२ अणमोल वचन है। (उपरोक्त सामग्री ज.ह.दवे रे' गुजराती साहित्य का इतिहास 'प्रका. हिंदी समिति, उ.प्र. लखनऊ सूं अनूदित)

परिसिस्ट (५)

'गवरी कीरतन माला' रा मणिया

१. श्लोक सम्यक पीयूष धाराद्भुत रस मधुर...
२. अधम उधारन विरद सुं न्यारो रे
३. आ कलजुग को, लोक चवाएन, साचे ही झुठे लगाने रे
४. आज में तो गिरधर जोया निरखी
५. चालो जइए सरवीयो, हरी की पास, आयो रे रत वंसत मास
६. नावे, नावे रे, नाम समान
७. मारे मंदिरी ए पधार्या गिरधारी रे बनमाली,
८. सो हरीजन रे, हरी को कहावे
९. हरीजन हरी कुं हेते भजे,
१०. हरी बिन मेरे नांही कोइ,
११. जे जे पुरण ब्रह्म स्वामी, जे जे पुरण ब्रह्म स्वामी,
१२. पहेली आरती, मन सुध कीजे याते कारज, संकल ही सीझे,
१३. प्रथम गणपत ने गाउं सुमरे सदा सुख पाउं
१४. सुख सागर, सीवराज, सदाये–सुख
१५. सुमरो शीव संकर सूखकारी
१६. आरती श्री रघुनाथ ,मानसी करी, निरखत मुखारविंद, उलट भरी
१७. आज तो, अजोध्यापुर में आनंद
१८. आज तो, अजोध्यापुरी, चिहु दिस फुली रे माइ
१९. राजा दशरथ ने घेर, आनंद भयो री, आजे प्रगटयो पुरण ब्रह्म
२०. हेरी, नोमी के दिन, बाजे नगारां कुंवर कौसल्या ए जायो री
२१. कौसल्या, हरी कुं गोद खेलावे
२२. रामचंद्र, जगतवंद, जागो मेरे आनंद कंद
२३. देख्यो री मोरी, नेनन में रघुवीर
२४. रघुनंदन रामालाला
२५. लगी अखी आं मोरी, सियाराम रघुवर देख के
२६. हींडोले हेली, झुलत रघुवर राये, राज मे तो
२७. हेरी, जल केसे जाउं रघुनाथ खेले फाग
२८. हेरी, रघुनंदन मेरा, होरी खेले, सरज्यु के तीरा

२६. धनुष कर तोर्यो श्री रघुनाथ
३०. रघुवर, आये रे, सुनी बात
३१. सामरो रघुनाथ रे यामे सामरो रघुनाथ
३२. तुम बिन मेरे, राम सलुना, पलभर ना रहेवाये रे
३३. दशरथ करत बोहोत पोकारा
३४. माता कौसल्या जु सयां ने, मानो जो बात मेरे
३५. अनुमान के जो, जइ राम ने संदेशो रे,
३६. जे जे राम, राजा राम–जे जे राम
३७. जो ने, राम जी रमे छे रूदा कंदमां रे, तुं जो ने, तपासी तारा तनमां रे
३८. प्रात उठी सीताराम कुं भजीए
३६. मुरत सामली, मेरे मन बसी
४०. राम तेरे, चरन कमल ले, पाइ. पाइ मांहे समाई
४१. हरी, रघुनंदन लाला, कमल नेन रसाला
४२. जानकीनाथ चरन, भजो रे मन, जानकीनाथ चरन
४३. भज रामा, रामा राम–भज
४४. राम जपो रे मन भाई तोये कइ बेरीयां समजाई
४५. राम रिझावो रे, प्राणी कारज तारां सरसे
४६. सीता राम भजो भजो मन रे हरी हरी
४७. सुमरो जानकीनाथ तेरो जनम सुधारे
४८. जीनकी लगन, राम से लागी, धन जीवत, जुग मांही रे
४६. नेहडा, नाम से लगाउं, नाम से लगाउं, परम पद पाउं
५०. मेरे सीर पर, राम धनी रे,
५१. रघुवर मोहे, लागे नीको
५२. रसना, राम नाम गुण भावे
५३. राम नाम धन सार अमारे
५४. राम रंग हुं राची
५५. लागी, रट रामा राम, रामा रामा राम
५६. रामचंद्र रूप देख के, सीयाराम जुरे जोरी
५७. शुकदेव कहे कथा परीक्षत ने, गज उधर्यो तेनी विगत ने
५८. भक्त हेते, प्रगटया देव मोरार
५६. सेना माटे नाइ थया, गया पवन करवा मोरारी रे
६०. सेना भगत ना, संसे टालीया रे
६१. अखंड वन्द्रावन धाम छे, त्या सदा अमारा वास, त्यां अमे रहीए छे
६२. आज गरबो अमारे घेर माडीओ **रे, लोल तेतो व्रिज नी** नारी ना मन में गम्यो रे

६३. चरन सरोज, वंदित गोपाल
६४. जे जे गोविंद गिरधारी वो, तेरो महीमा अपरंपार
६५. जे जे राम गोवरधनराय जी, समरे जनम जरा दुःख जायजी
६६. धन्य धन्य व्रीज को वास रे, जीहां श्री कृष्ण लीयो छे निवास रे
६७. मारे तो हरी, हेम नो हार छे
६८. रघुवर जे जे दीनदयाल
६९. वाले मारे, मध्यमां रास रमाडी के जोवा सरखी रे लोल
७०. सरोज सीतल, चरण कमल ते, वंदुं हुं उरमांये रे
७१. हरी के गुन सब संतन मिल गांए रे
७२. हरी पुरण ब्रह्म रामैया, आद्य, अंत, केणे ना लैया,
७३. हरी बडे गरीब निवाज, संतो भाई
७४. आज देखे नंदलाल, सखी री मोरी
७५. आज में निरख्या हरी, सुंदर मुख जोयुं फरी फरी
७६. आये हरी मेरे आज सुपन में
७७. आवो, आवो, आवो रे, अरे, कानुडा तमे आवो रे
७८. उज्वल माल मोतन की मनोहर, गिरधारी उर धारी
७९. कनैयो मारो, मोरली वालो रे
८०. कालो कनैयो निरखो री ललनां, काली कालिद्रां की तीर
८१ कुंजन में देख्यो, हेली हो नटनागर रे निहार
८२. के सजनी, सरद पुनम नी रजनी, अती अजुआली रे, लोल
८३. गउचारी घेर आवे, गिरधर
८४. गिरधारी ज्यु की छबी अती भारी
८५. गिरधारी रे लाल, वली वली वदन निहारूं रे, मिठडा वाला
८६. तन कनी दोहनी, कनक की कर कमल, तनक कानूडो दोहत गैया
८७. दरसन कुं दीजो रे, नंद कीसोर
८८. निरख्यो, नटवर रे, नागर
८९. नीको लागे सामरो, होरी खेलीये हो
९०. नीको सुंदर नंदजी को लाल, मुरली बजावे निपट रसाल
९१. प्रात उठी तमे, हरी, हरी, जपो पुरण परम आनंद पावो
९२. प्रात सकाले आरती, गोपाल नी रे कीजे
९३. पीलां पीतांवर, फ्हेर्या पुरूशोतम, पीली पुष्प नी माल
९४. बन आये राधे राणी, सुंदर नवल किसोरी
९५. बंसीवाला, तुं मारे घेर आवो
९६. बांकी चाल, चलत हो मोहन, बांके हो गिरधारी रे

९७. मंदिर आवो गिरधारी, मारे तमें, मंदिर आवो गिरधारी
९८. मीठा लागो छो रे, गिरधारी ज्यु
९९. मुरली वाले सु, लगन लाग, रही
१००. मेरे मन, वसीयो रे सुदंर श्याम
१०१. मेरे मन, वसो जी सुंदर श्याम, ज्युं लोभी के मन दाम
१०२. मोही मदनगोपाल, मगन थइ, मुख जोई रे, अवर न सुझे
१०३. मोहे गिरधर लागे, प्यारो छे, प्यारो छे मोहे प्यारो छे
१०४ यमुना त्रट त्रिभंगी ठाडो, मु
१०५. लाल पाग, पापेण उपर, लाल नंद ज्यु के लाल
१०६. वसंत आयो, चालो वन्द्रावन सखी हरी खेले होरी
१०७. वसंत आयो, फूले व्रदांवन, फूली सकल व्रज नारी
१०८. व्हालो मारो, आवे छे धेनु चारी
१०९. वे आवे गोपाल, आली री
११०. श्री क्रष्ण गोविंद गोपाल धनी को, नित नित दरसन पाउंगी
१११. सखी री, व्हालो, वच्छ चरावन जात
११२. सामलीया रे, पुरण सनेही आवो, करूं तारी में सेवा
११३. सुंदर सामरो, नंद जु नंदन निरखत नीको लागे रे माइ
११४. हरी, नजरू मोरी आवंदा, सुजनी,
११५. हरी मारे मंदिर रे आव्या, मोटे मोटे मोतीडे वधाव्या
११६. हरि मेरो गिरवर धारी, कुंज में खेले फाग
११७. होरी, खेले मदन गोपाल
११८. झुलत श्री नंदलाल, हींडोले
११९. झुलो तो, लाल हींडोले झुलावुं
१२०. भाव को हींडोलो बन्यो भाव सु निरखनां
१२१. हींडोलो बहु रंग नो, हींडोलो रे, तेनी सोभा बरनी न जाय
१२२. हींडोलो, हेली रचीयो, रंग सु बनायो
१२३. केसुअन फुले वन, फुले फागुन जन, फुले सब सखीयन, वन खेलन चाली
१२४. मारी सखीयो सर्व साहेली रे, आवो रे रास रमवा ने
१२५. व्रन्द्रावन में हींडोलनो रे, काना प्यारे जी, हा हा काना प्यारे जी
१२६. सखी व्रन्द्रावन की सोभा जोइ, हरी लीला देखी ने मोही
१२७. के सजनी, सुंदर यमुना त्रट, अती रलीयामणो रे, लोल
१२८. हींडालो, रचीयो अती भारी, जी हां झुले कुंज विहारी
१२९. हींडोले हेली, झुलत श्याम सोहाये
१३०. माखण मिसरी खावे, कानुडो

१३१. गिरधर गवरी का मंदीर बनाया
१३२. अविगत की गती, को नहीं पावे, सचराचर में हरी वेद बतावे
१३३. आज तो, नंदजु के द्वार भाइ, हरख वधाइ रे
१३४. जसोदा ने आनंद, आजे तो, जसोदा ने आनंद
१३५. जसोदा रानी, अपने लाल कुं लडावे प्रेम के गोद पर, प्रभु कुं खेलावे
१३६. धन धन आज को दन, जसोदा रानी
१३७. नटवर नागर नंदजी को लाल छे,
१३८. नंद ने घेर आनंद आज तो, नंद ने घेर आनंद
१३९. नंद जसोदा नुं भाएग रे, प्रगटया पुरशोत्तम राय रे
१४०. पारणे झुले श्री गोपाल
१४१. पारने बिराजे कनैयो, पारने बिराजे
१४२. अकल लीला एनी, वरणी न जाये, ब्रह्मादिक जोई विसमें थाये
१४३. करगरी ने कानुडो नवनीध मागे के वो
१४४. कहेवा दे नंदलाल, जसोदा ने, कहेवा दे रे
१४५. कानुडा तारी माया रे, केणे नहीं जाणी
१४६. कानुडो, माखण काज रडे
१४७. गोपी नचावे कुंअर कनैया, भेद नहीं को लहीया रे
१४८. जसोदा हरी कुं हेते झुलावे सिव सनकादिक देखन आये
१४९. जागो प्रभु भयो भोर रे, पंछी करे सब सोर रे
१५०. जे जै गिरधारी लाल, तुम पर बल जाइ
१५१. जो रे वे नी प्रभु आवे, पात लीयो
१५२. देख्यो आली ब्रिज में बालमुकंदा
१५३. ना, ना नहीं बोलुं तुम की साथ, मेरे सब के विच हे पकरे हाथ
१५४. नावे कोइ मारा, वालाजी ने तोले रे, सुंदर मुख जोइ दल मारूं फुले रे
१५५. नेणे देखी, कहुं रे कनैया
१५६. प्रात भयो, जागो रे, मेरे गोपाल,
१५७. बासुरी में आवत गोडी गावे
१५८. ब्रिज नी वारी सु, मथुरा नो कान मोह्यो
१५९. माखण मांगे श्री बालमुकंद
१६०. मंदिर आवे मारे, दाडी गिरधारी बेनी
१६१. यशोमति जु के, आली, अंगना, खेलत गिरधर मगना
१६२. रेखत कुंअर कनैया, आंगना में
१६३. व्हालो मारो, तोतरू, तोतरू बोले
१६४. व्हालो, व्हालो, व्हालो मुजने, व्हालो मुरली वालो रे

१६५. ब्रिज में बालमुकंद रमे रे
१६६. वेदन कयूं, न डरे रे कानुडा
१६७. श्री नंद ज्यु के आंगण मणीमय जडीया
१६८. हां रे कान मही मथन ले मही, मारी छोटी मटुकडी मां दही
१६९. अब मोहे माखन दे रे मात
१७०. एणे रे, कानुडे व्हाले, गोवरधन तोल्यो रे
१७१. कानूडा, ओलंबड़ा, नित्येरे लावो
१७२. कारण रूप कोइ कानुडो तिहारो रे
१७३. काहु कानुडा कान, काहु न जइये
१७४. गोपीयो गारी लालन कुं न दइये
१७५. छांडी मथनी आं रही ए, मनमोहन
१७६. जसोदा गोकुल क्यम रहीये, मेरी आड करी तेरे छैये
१७७. जसोदा गोकूल में रे, कहो केम रहीये
१७८. जसोदा रानी कानुडो, देखन को छोटो
१७९. तुंम पे कून न च्हावे, कहो कनैया
१८०. तुं वार जसोदा तेरो कनैया हो
१८१. प्रात उठी दधी मंथे, नंदजु के रानी, एह सोभा नर, मुनीये वखाणी
१८२. बरज बरज हाजु कान, मेरो दधि पायो रे
१८३. मथन दे नंद नंद मही मोहे
१८४. मही मोकुं मथन दे रे कहान
१८५. माई मोहे माखन चोर कह्यो
१८६. माता जसोदा काने, मट्टी रे खाई, ना माने बुझो, बलभद्र भाई
१८७. माता जसोदा में ना, माखन खायो, बछरा चरावन् यमुना पे धायो
१८८. यशोदा बरजो कुंवर कनैया
१८९. वारो, वारो जसोदा माता तुम, वांरो कान तुमारा रे
१९०. सब गोवालन, मिली दे गारी, मेरे कनैया तेरे, ओर में हारी
१९१. समझ समझ दल खोज, दधी नहीं खायो
१९२. हे जसोदा रानी, तुं भोरी हो
१९३. आज तो हींडोले झुले,नंद ज्यु को नंद भाइ
१९४. कानुडा पासे मुने तो घणुं रे गमे छे
१९५. काहान! मुरली रसाली रे
१९६. खेलत होरी फाग री; कोइ संग रसीलो
१९७. खेलुं मेरे प्रभुजी के संग, पास रसभरी होरी आइ रे

१९८. गिरधर बांधी पाघ लट–पटी
१९९. जे जे दीन दया, हुं वारी जी, छो भक्त वच्छल प्रतीपाल
२००. नंदलाल ने देखी मोरी नेन ठरी
२०१. प्यारो प्यारो प्यारो मोहे, प्यारो मुरली वालो रे
२०२. बन हुते आवत नागर नट
२०३. भवन मारे आजो रे, नागर नंदा
२०४. माइ आज को हींडोलो लागे, नीको नंदलाल रे
२०५. मुरली वाला मुरली वाला, सब गौअन के रक्षपाला
२०६. रंग रसीला, होरी आइ हे होरी
२०७. वसीया ते व्हाले रे व्हाला, श्रीनंद ज्यु के कानड काला
२०८. बांसुरी वाला, बांसुरी वाला, सब गोपीयन के गोपाला
२०९. बांसुरी, सुनी रे कुंजन में, होरी खेले, नंदजु को लाल
२१०. व्रन्द्रावन बंसी बजावे छे
२११. व्रन्दावन रास
२१२. शशीवदनी सब होरी खेले, सामलीया की साथ
२१३. श्री नंद जु के नंदा, बाइ, आनंद कंदा
२१४. सखी मारी ! ओ पेलो हरी देख
२१५. सखी ! मुने गिरधर लागे प्यारो
२१६. सुजनी आव रे, बेगी धाइ
२१७. सुण ले भटु, आज में निरख्या हरी
२१८. सुपनुं लाधुं आज, सखी री
२१९. हींडोले आवो, प्रेम करी झूलावुं
२२०. हीडोलो नवल रे मोरी सजनी, झुलेरे श्री नंदलाल
२२१. आद एक थी अनंत बनाइ, यमुना तीरे मुरली बजाइ
२२२. नाचे, नाचे, नाचे रे कनैयो
२२३. भज गोविंद गोपाला, श्री कृष्ण मोरली वाला
२२४. मोहन भरी मुरली बजाई, श्रवण सुन सुध विसराइ
२२५. व्रन्दावन सघन कुंज, रांस रचाइ, जमुना को सुभग तीर कदम की छांह
२२६. व्रन्दावन की सुंदर शोभा, केसी कहुं सजनी रे लोल
२२७. व्रन्दावन की सुंदर शोभा, सुंदीर आसो मास रे
२२८. सानेरे काजे सदु गोपी आव्या, सुं चितमांरे काम, लाजे रहीये जी
२२९. हरी हां हां वन्द्रावन रास रच्यो, सरद रेणी अजुआरी
२३०. को खेले तुम साथ होरी

२३१. ज्यान दे घर कुं, सयाने सुनावं
२३२. तुम नंद जु के छेल रे, मटुकी मोहन मेल रे
२३३. हां रे काना, पालव मेरो मेल रे
२३४. हां रे कृष्ण काहू को मांगत दान
२३५. गूजरीया गुमानी, हां रे बोलो मोरी
२३६. जावा द्यो दिनानाथ, हां रे काना
२३७. मही बेचन चली मही आरी रे संग भ्रखुभाण दुलारी रे
२३८. सानुं दाण मांगो, क्यांनो दाणी रे
२३९. दाण दधीनुं अमो लइसे रे, तारा कंस ने उतर दइसे रे
२४०. सानुं दाण मांगो मरतक, मही छे रे, अमे जाइ जसोदा ने कही से रे
२४१. नंद कूंवर लाडक वायो रे, एणे पालव मारो स्हायो रे
२४२. आवो आवो रे सरखी साहेली, सखे मली रे
२४३. आवो क्युं न कान रे
२४४. एक बेरियां ब्रिज आवे रे, श्री नंदजु के लाडले
२४५. कानुडा काला, बांसुरी वाला, आवो बल के वीर रे
२४६. कानुडा ब्रजवासी रे, अरज सुनीये
२४७. कानुडे व्हाले, मन हरी मेरो लीनो
२४८. गिरधर मारग मलीया, सखी मुने
२४९. चालो सखी जइये व्रदांवन में, होरी खेले गोवरधन राय
२५०. दीनानाथ दयाल, दरसन नी ले लागी रे, वेणे वश कीधी
२५१. दुःख दइ, गयो छे घणुं, हरी मोहे
२५२. देखो भार, आडी को भाग, मही बेचन कुं जात
२५३. नंदलाल मोहन लागत नीको या बिन सब जुग फीको
२५४. प्रथम गणपत, सारदा ने हुं तो लागुं पाय
२५५. प्रीत तो मेरी, प्रभुजी से लागी
२५६. बाजी बांसुरी, यमुना की तीर
२५७. मथुरा में साने लोभाणा, लोभाणा, लोभाणा
२५८. मथुरा में हरी, नही घुं जावा
२५९. माइ नंद के नंदन, मेरा मन हर्यो हो
२६०. मारूं मन मोह्यो मुरली के नाद
२६१. मुरत माधुरी सामरी रे, उरे कारी कामरी
२६२. मुरली मां मन हर लीधां रे, कहो क्यम कीजे
२६३. मेरे मन वसीयो श्री ब्रजराज गोपाल धनी

२६४. मेरो मन मोह्यो सामरे सुहरी
२६५. मोरली बजाये रंग भर, यमुना के तीर कनैया
२६६. मोरली मां मोहनी डारि रे
२६७. यमुना तीरे कुंवर कनैया, मुरली नीकी बजाइ
२६८. लागी रे लगन नहीं छुटे
२६९. लागी, लागी लागी कानुडा, तोरी लगन मोहे लागी रे
२७०. ले लागी महाराज, लालन तेरी
२७१. वनमाली वन में, वेण वजाडी, चित्त चोरी ने लीधां रे
२७२. व्रन्दावन मुरली बजावे छे'
२७३. सुण सुजनी कानुडे आज व्हाले दीठी रे
२७४. हरी बिना नहीं जीवुं, ओ नहीं जीवुं रे
२७५. उधव जी कहीयो हरी सें संदेशो, एक ज्याइ हो
२७६. उधव, मुरली बजाइ कीनी धेली रे
२७७. उधो कहे, सुनो गोपी, व्हालो नहीं, न्यारो रे
२७८. उधो, कानुडो धुतारो, कामण गारो रे
२७९. उधो जी, अमने वाही गयो रे हरी
२८०. कानुडा, मारे भुवन, पधारो रे
२८१. व्हाले, व्याकुल करी, वेण वजाइ रे
२८२. राधा जी , तारो कानूडो मांग्यो देजे, भले प्रभाते पाछो लेजे
२८३. अजहु चेते तो भला रे मन, माया ये सब जुग छल्या रे।
२८४. अध घड़ी हरी नुं नामज ल्योने, वीसारो घर धंधा रे
२८५. अब मन मांजारी कूं मारो, गाफल पर्यो ग्रभ के गारो
२८६. अब समझ रे प्राणी, तुंरे सोदे आया रे
२८७. अब समझ रे, मन भाई, इस जग में, जूठी सगाइ
२८८. आज काल अब आरुढी चलणा, अब कहा गाफिल रेहेणा वे
२८९. आ जुग मां सगो सामलीयो रे, साचो श्री गोपाल जी
२९०. आलस तज रे, मुरखा शुं सुतो रे गमारा
२९१. एतनी क्या मगरुरी, दो दन में चलना जरुर
२९२. एसो जनम न आवे बार–बार, मन मुरख हरी कुं चेतार
२९३. एसो जनम बेर नहीं पाये, काहे कुं रे मन, गोविंद न गाये
२९४. ओ मन मेरा, गोविंद गुन गावे, गावे, गावे, गावे र
२९५. कर मन गोविंद की बंदगी
२९६. गावे गावे गावे रे, हरी गुन गावे

२६७. गोविंद गुण, ले गाइ मन गाइ
२६८. चलना रे मन जानी रे, जरूर चलना हे रे
२६९. चलो मन खेली चलो, अपने प्रभु, संग चलो
३००. चलो होरी खेले अपने, व्रन्दावन जाये
३०१. चेत चेत मन अंधा, भज ले नागर नंदा
३०२. चेत, चेत मन चितडा मांही, सोए का भयो भोर हे भाइ
३०३. चेतन तुं माया में डुब्या, हींडोले भरम के झुल्या
३०४. जगत तुं, देख रे झुठा जेसा हे, रेन का सुपना
३०५. जनम विरथ गयो, भजन बिनु
३०६. जे जे गोपाल लाल, रट ले मन भाइ रे
३०७. जे ने सत्य गुरू की म्हेर, ते करे न किनकी सेव
३०८. जो तेरे दरसन चहीए, प्रभु का
३०९. जो ते भजन न कीया जग में, कहा कुं आया।
३१०. तव तन में जु ब्रह्म, हे मन!
३११. तुं तो समझ मन मगरूर, तुज कुं आखर मरना हे
३१२. नक्कारा मोत का बाजे, कि सावन मेघ ज्युं गाजे
३१३. नाम समान न आवे हरी ना, नाम समान न आवे रे
३१४. नेह काहु पे न करणा, भोर मन
३१५. पाक तेहारा नाम, में मिट्टी की बंधी मिट्टी से बनाइ देह, ये गाफिल गंधी
३१६. प्रात भयो हरी, भजो मन प्यारे, या जुग से तुम हो रहो न्यारे
३१७. प्रात भयो तमे, जागो रे प्राणी, हरी नाम भजन ने करीये रे
३१८. फकीरी, कठणा होये मत करो कोइ ए यारो
३१९. भक्ति कठण अपार रे, हरी की
३२०. भज मन गोवरधन धारी, बहु नामी नेन न न्यारी
३२१. भज मन गोविंद गोपाल मुकंद मोरारी
३२२. भज मन नंदना नंद नेरे, करूणाकारी मोरारी
३२३. भजन मत भूले रे, मन मोरा
३२४. भजन बिना, मिथ्या जनम गमावे
३२५. भुलीं गयो रे हरी, भुली रे, कोल करी ने गरभ मां
३२६. मत कर मन मगरूर गुमाना
३२७. मत कोइ गुमान कीजो जी, गोविंद गावे मेवासी
३२८. मती बेरागी आं प्रीत लगाये हरी नाम से
३२९. मन की माला जुगते फिरे रे

३३०. मन बस कर ले रे जोगी
३३१. मन भाइ, चेतो रे चितड़ा मांहे, हरी से कर हेत रे
३३२. मन माया में रह्यो ललचाइ, कुटुंब रूपी तने लागी काइ
३३३. मन मेलुं मती मंद
३३४. मन रे समझ बूझ कर चलणा
३३५. मन साधु नी संगत करतां विलबं न करीये रे
३३६. मन हरी नाम विसार्यु न किधुं कोइ नुं वार्यु
३३७. मन हरी संग होरी खेलीये हो, खेलीये रे, जनम मिट जाय
३३८. मनुवा मेवासी, तुम कहो फिर कर कुन हो, कांहां अब जासी रे
३३९. मुश्किल बांस बरत का खेल अब मत चूके रे नट दाव
३४०. मेरे मन मेरे मन हरी नाम लागे मीठो
३४१. मोह काहु पे मन न करे
३४२. या कलजुग में क्रष्ण सगा रे ओर न दुजा कोइ रे
३४३. रसना, बोलो मेरी हरी, हरी
३४४. रसना, हरी नाम निरंतर लीजे
३४५. लीजे, लीजे रे, हरी नाम भजन करी लीजे
३४६. बार बार औसर नहीं पेखे, मानव देह छे दोहला रे
३४७. श्री गोविंद गोपाल भजन बिना, यूं ही जनम गमावे रे
३४८. सदा ये आनंद में रहीये
३४९. समझ मन, हरी नाम तो निश्चे तारे
३५०. समरो मन गोविंद गोपाललाल
३५१. सहुने व्हालुं नाणुं जोने जीव सहुने व्हालुं नाणुं
३५२. सिर पर लग्या यम का हल्ला, का फिर क्युं भुल्ला रे
३५३. सुन समझ, सुमत विचारी, या तेरा भुवन वेराना
३५४. संगत हुआ तो क्या भया, मन को मेल न जाइ
३५५. संसार सुपन रे संतो, संसार सुपन छे
३५६. हरी को ध्यान धर लीजीये, समझ मन भाइ रे
३५७. हरी को नाम लीये तर जाइ, रात दिवस रसना लो भाइ
३५८. हरी को नाम ले रे गमार
३५९. हरी चरणे चित्त धारो, लोभीडा मन
३६०. हरी नाम बिना ओर बोलना क्या
३६१. हरी नाम भजी ए प्राणी, आखर मरवुं छे ते जाणी
३६२. हरी नाम लेता सुं जाये छे, सिर पर भार न लागे छे

३६३. हरी नाम समर मन भाइ री
३६४. हरी भक्ति बिना रे, जनम जाय छे वरथा
३६५. हरी भजन करो, गरव गुमान मिटाई रे
३६६. हरी भजन करो बेर बेरीयां, तुं कहा सुतो मनवा
३६७. हरी भजन नहीं कीया, बालापन में खाया, खेल्या, नहीं सुमरन, नहीं दया
३६८. हरी भजन बिना गयो भवहारी
३६९. हरी भजन मत भूले रे, भोरे मन
३७०. हरी भजन बिना, मिथ्या जनम गमाइ
३७१. हरी भज रे मन भाइ अब तुं
३७२. हरी भज ले रे भाइ, समज मन
३७३. हरी भज, हरी भज, हरी भज, भाइ
३७४. हरी रस पीजे संत सनेही, वसंत मास अब आये रे
३७५. हरी वसे छे हाल हजुर रे, कहां जावो जोवा दुर रे
३७६. हरी बिना नहीं तरना, रटो निस बासर राम
३७७. हरी बिना रे, कोहे नहीं अपना, आ जुग जाणो रे रेन का सपना
३७८. हां रे देखत पेखत दरसायो रे, बुढ़ापो चली आयो
३७९. सत्य गुरू सोही सत्य बतावे
३८०. हां रे मन, मुरख माहरा, सतगुरू ने भजीये
३८१. मन राम, राम, राम, राम, राम, भजी ले रे
३८२. राम भजो रे रूडा, मन रे
३८३. समर समर, सीतापती रामकुं, एक तुंही, एक तुंही बोल मेना
३८४. प्रात उठी, रामक्रष्ण कहीये
३८५. भज मन रामक्रष्ण सतगुरू, गोविंद गिरधारी
३८६. रघुनंदन, यदुनंदन, रसना रट लैया
३८७. श्री रामक्रष्ण गोविंद गदाधर, भज नारायण स्वामी
३८८. आतम ज्ञान बिना प्राणी ने, सुख कदी नव थाये रे
३८९. जे जायुं ते जाशे, निश्चे जाणीये रे
३९०. मन समझने शीखामण दउं एक सारी रे
३९१. साधुजन की संगत करतां, विलबं न कीजीये रे लोल
३९२. हरी नां जन रे, सीतल रहे सदा, हां रे दाझे नहीं को काल
३९३. हरी ना, भजन ने, हेत धरीने करजो रे, आ माया काली नागनी देखी ने डर जो रे
३९४. रूडां भवन बनाय के, गुमानी करे बडाई

३९५. गवरी गउ गोपाल की, चरण चारो रस च्हाय
३९६. गवरी गिरधर कुं तजी, करे जगत से हेत
३९७. गवरी गिरधर लाल से, लगी निरंतर दोर (अपूर्ण)
३९८. गोविंद किस बिध पाइये, मन विषया संग राच्या
३९९. जीव ब्रह्म ते एक छे, जोवे जीव की जात
४०० जे नरे रिद्धि सिद्धि तजी मूरख ता ललचात
४०१. भज ने गोविंद, राम मन, चित थी पल न विसार
४०२. गवरी गुरु परमातमा, बंटु शीश नमाय
४०३. अंतर मां आनंद उपनो, मानुनी मंगल गाये रे
४०४. आत्मा अजर अविनांशी रे, संतो
४०५. आत्मा एकज छेरे, घट–घट में भरपूर
४०६. आद्य अनादिनो एक छ, पूरण ते परिब्रह्म
४०७. आ मंदिर मारुं पास रे, शामवर छोगाळा
४०८. आरती आत्माराम नीं कीजे, हरी सचराचर अनुभवी लीजे
४०९. एक पलक में खलक बनाया, खाली तेरा खेल रे
४१०. के सजनी, अगम भेद अगाध, कोइ भेद ना लहेरे लोल (अपूर्ण)
४११. के सजनी, सतगुरु स्वामी ए मुजने, कांइ करुणा करी रे लोल
४१२. कैवल ब्रह्म रे, आवे न जाये, गुरु क्रपाये रे, भ्रमणा भय जाये
४१३. ख्याल बिन, खाली भूमि न होये
४१४. खेलन चली राम नाम से होरी
४१५. गगन मंडल में अनहद, गड गडेर लोल
४१६. गरबो सणगायों ने, अनंत वाडी जालीयो रे लोल
४१७. गुरु दिया, क्रिपा कर ग्यान, मेरे मन भाया
४१८. गुरु ने मोकुं ज्ञान दीया भरपूर
४१७. गोविंद ना गुण गांसुं रे, सरवी
४२०. चतुर बिहारीलाले, चौपड़ मांडी सारी रे
४२१. चलो हंसा जइये, वसो विदेस
४२२. जे जे दीनदयाला
४२३. जेहने जोतां, जेहवडे फरां, तेज तुंही परब्रह्म
४२४. तारो निरगुण ब्रह्म कहावे, एनो पार कोइ नव पावे
४२५. तारा समागम बीना, सामलीया, मन निरमल नव थाये रे
४२६. तुंहीं तुंहीं रामैया भरपुर हो, मेरे संतो, देख्या अंतरपुर उर
४२७. दहाडो छे दीवाली माह रे

४२८. धन्य धन्य वेद व्यास गुरुजी, कुण कला रे करी
४२९. नहीं क्रम काया, नहीं मोह माया,
४३०. प्रथम पंचम भाग थी, पंड रच्यो तुं जाण
४३१. प्रात भयो उठो प्राणी, गोविंद ना गुण गाता रे
४३२. प्रात भयो तमे, जागो रे अनुभवी, उंघ अज्ञान ने दो ने टाली
४३३. प्रथम भूमिका खट क्रम करही, तिर्थ, बरत, धर्म, नीम में फरही
४३४. पुरण ब्रह्म पुरी रह्यो, अखंड एक स्वामी
४३५. पुरसोतम पूरण अनीनास, आपे रमण विलास रे
४३६. ब्रह्म नो भेद जाण्यो जने अनुभवी, भेद जाण्या बिना, भ्रम न जावे
४३७. ब्रह्म सनातन, तुंही में जान्या
४३८. बहुत ठगन में तो, जानी रे माया
४३९. माइरी ये देह में दिपक जरे री
४४०. माधो जी सरन तिहारे आये
४४१. मारा अलख गुरु देवा रे, ह्रदय में विराजो छो
४४२. मेरे सतगुरु स्वामी, सुन लीजे, मोकुं बनावो, निजतंत
४४३. मारे सीलतणी साडी, पहेरुं रे लोल, रामनाम रतन माला, कंठे धरुं रे लोल
४४४. मेरा मन, अब निरमल रे होइ
४४५. मेरे मन गिरधारी वस्यो
४४६. मेरो हरी सें लाग्यो नेह, खेलुं फाग री
४४७. मेरो राम नायक वणझारो
४४८. में तो स्नेही, बाबा रामजी, जूठा जग में, परना क्या
४४९. मोरे मन गंगा, प्रगटी छे भाइ, संत समागम ज्हांनवी तट पाइ
४५०. रग रग बोलत राम संतो भाइ
४५१. घुवर मीठा मीठा जुर
४५२. रंग हींडोलने रे, सोता, झुले श्री पूरण ब्रह्म
४५३. राम क्रष्ण गुणं गाउं अब में
४५४. राम नायक की, सामरी सुरत, अनुपम मुरत, सो मेरे नेन समाइ
४५५. रामैयो मेरो, भरपूर हो, हां रे न्यारो हे, साक्षी हजुर
४५६. लगन रंग घोरी खेली ए, सामलीया की साथ
४५७. व्रंदावन रस वरसे होरी, खेले गिरधरलाल
४५८. सतगुरु ए समजावी रे, आतम बोध दीधो
४५९. सतगुरु खेले, सदा वसंत, सुरीती द्वारे अहोनिश महामंत
४६०. सतगुरु स्वामी ने, मो पे, करुणा करी,

४६१. सत्य शब्द की फाग अस विध खेले होरी
४६२. सप्त भुमी के, अजब झरुखे, हरी का दरसन पाउं रे
४६३. समज मना, हरी भजन करो ना
४६४. संतो रे, स्वयं पद मुज ने भास्युं
४६५. संतो रे, हरी हरीजन एकज जाणो
४६६. संतो रे, ज्ञानी उसकुं कहीये
४६७. सामलीया रे, सकल घट पुरन, निरते देखा न्याली
४६८. सुनवे संत रे, हंस की एक बात, गुरु गम की
४६९. सो हरी जन, हरी को रे संतो
४७०. सो हुं, सो हुं ब्रह्म ए भज
४७१. हरीजन एसा विरला कोइ, बग तामें केसा ठरे
४७२. हरीजन विरला, उसकुं कहीये, सुनीयो रे संत सुजान
४७३. हरी ने जोतां रे हुं, हरीमय थइ, टली गयुं नाम ने रुप
४७४. हरी रस मीठा भाइ, के पीवे, संत सुरा, संत सुरा
४७५. हरी वसे छे घट–घट मां, नहीं मिले भरम भटक मां रे
४७६. हरी बिना रहीयो न जाय, माइ री मोसे हो
४७७. हरी संग खेलुं होरी, आली री मेरे, हुंस हिरदे में घनी र
४७८. हां रे, हरी हीरो लाध्यो मारे हाथ रे, अब में नारे गमाउं
४७९. हींडोले आवो कनैया झुलांउं, आवो कनैयां झुलाउं
४८०. हींडोले हींचे रंग रसीयो, सब सखीयन मन बसीयो
४८१. हींडोलो नवल हरी रसीयो, मेरे रुदीया में बसीयो
४८२. हे कोइ एसो संत विवेकी, उलझन कुं सुलझावे रे
४८३. होरी खेले अवीनाशी संग
४८४. झबक के जागे मनमोहन, दास कुं दया करवा रे
४८५. रामधुन लागी निरगुन नाम की, निरगुन नाम की
४८६. सत्य गुरु वे ज्ञान दीयो रे, मगन भयो मन मेरो रे
४८७. सुन वे संत ग्यानी, को अनहद धुनी
४८८. अदल फकीरी होइ, धीरज ध्यान लगा के निरंतर, दसमे द्वारे पोइ
४८९. अब में रांची राम के संग
४९०. हमारे, श्री रघुवीर हे नाथ
४९१. ये घट में बोलता राम ओलखावता रे, बोलता राम
४९२. आली री मोकुं गिरधर लागे प्यारो
४९३. एक तुंही, एक तुंही, ओर न दुजा

४९४. कहां जाउं रे गिरधर, घर में मल्यो, घर में मल्यो रे मारा, पट में मल्यो
४९५. कोइ नाम समान न आवे रे
४९६. चरन सरन गिरधर के, हम तो
४९७. तारी छबिला लाल ले लागी रे, लटके लोभाणी
४९८. तुंही बिना कोइ, नाही सगो रे
४९९. निरधन को धन राम, माइरी मोरी
५००. पल नहीं चित से टरो रे, तोसु लागु मारु मन
५०१. प्रीत तो, प्रभुजी सें जोरी
५०२. पुरण ब्रह्म भरपुर भाइ रे, आतम राम सदा सुखदाइ
५०३. बीजु गमे ना, बीजुं गमे रे, सुंदर तारुं नाम सामलीया
५०४. मात मुकंद मारे, तात त्रिकम मारे, भ्रात भुधर तुं जाण रे
५०५. म्हारे तो गोविंदा तारूं, घणुं मोघुं नाम छे रे, मारे तो गोपाला
५०६. मुने तारुं, नाम भज्यानी, लागी छे लगन
५०७. मुने व्हाला लागो छो, राज हरी
५०८. मेरा मन राम ही राम रटे, ओर बात कछु न कथे
५०९. मेरी जीय एसी बनी, कहा काम मेरे
५१०. मेरी लगन लागी, तो सु, हरी
५११. मेरे मन, लागी रह्यो, कुंज को बिहारी
५१२. मेरो मन मान्यो रे गिरधारी
५१३. मोहन मित्र किनो रे भाइ
५१४. रामजी कुं, रुदीया कमल में राखुं
५१५. रामनाम रस पी जे रे मानु, ओर कछु नहीं भावे जी
५१६. रामा तुं तो छाइ रह्यो, घट सारी
५१७. रामा पुरण ब्रह्म भरपुर, तुंहीं एक जाना हो
५१८. लगन लगी तब जानीये रे, कबहु छुटी नहीं जाये रे
५१९. लगी रे मोरी गिरधर की संग गोठ
५२०. वाजे छे, धुन वाजे छे, मारे अनहद धुन रुडी वाजे छे
५२१. श्री भगवंत भजन बिना मोए, ओर कछु न सोहावे रे
५२२. श्री रामक्रस्नपु लगन लगी री, सो टाली नहीं टले जी
५२३. सतगुरु मिल्या रे सुजान, मेरा मन, मगन भया रे फकीर
५२४. सूणने सुजनी, कहुं एक आजनी, मेरे उर एसी, बनी हे बात
५२५. शोरे चडावुं पाड, मारा प्रभुजी जेणे, मनुष्य देह ने, आप्यो रे
५२६. हम नहीं अब, हरी हरी वो, हरी हरी वो, हम नहीं

५२७ हरी कुं गाउं में तो हरी कुं रिझाउं रे
५२८. हरी रस नीको, जिस्ने चरव्वा, सोइ जाने
५२६. हरी रस मीठा रे कोइ अनुभवी संत बखाने
५३०. हां रे तेने, क्या किया, बांसुरी में, मन हर लीया
५३१. ज्ञान घटा घेरानी, अब देखो
५३२. अब रख्खो मोरी लाज, महाराज, गरीब निवाज
५३३. क्रीपा करीयो हरी, अब मो पे
५३४. कुंण मेरो जनम सुधारे, प्रभु बिना, कुण मेरो जनम सुधारे रे
५३५. कुंण मोपे क्रीपा करे रे गिरधारी बिना, कुण मो पे क्रीपा करे रे
५३६. गज उगारण, गणिका तारण, नरक निवारण नाथ रे
५३७. घेर आओ दीनदयाल, तलफे आंखलडी रे
५३८. जागो, जागो, जागो मारा प्रभु जगदीश
५३६. जे जे राम 'गोवरधनधारी भक्तवत्सल कुंज बिहारी
५४०. जे जे राम गोवरधनधारी, सुंदर तारुं नाम
५४१. तिहारी वडाइ सामुं, जोए रे विसंभर
५४२. तिहारो भरुसो मो कूं भारी, गोपाललाल
५४३. तुम गरीब के निवाज, में गरीब तेरा
५४४. तुम तजि कहां जाउं री
५४५. तुम तजी प्रभु, ओर कहां जाउं
५४६. तुम देखंदा चाह मोहे, मेरे गोपाललाल
५४७. तुम बिन कछु कल न परे, मेरे नंदलाला
५४८. तुम बिना को, राम मेरे, खबर लेवे मेरी
५४६. तुम बिना दिनानाथ दामोदर, को आगल अरज करीये रे
५५०. तुं सरीखो एकज तुं ही, हरी, तुं ही हरी रे व्हाला तुंह हरी
५५१. दया करी दिनानाथे रे मुज पे
५५२. दया मो पे कीजे दीनदयाल
५५३. निज दास–दासन में, मेरी, कित गिनती हो
५५४. पतीत पावन तेरा, नाम हरी रे
५५५. पतीत पावन तेरो नाम रे, वैश्रवन जन को विश्राम रे
५५६. पा मुं, पा मुं रे पा मुं कानुडा, ताहरूं दरसन पा मुं रे
५५७. प्रभु मो कुं एक बेर दरशन दइए
५५८. प्रभु मो कुं एक भरोसो तिहारो
५५६. प्रभु में तो पापी, बहुत अजान

५६०. प्रभु मो हे, कछुना, चैये रे
५६१. पोढे क्युं बने, गोपाल हरी
५६२. भक्त वत्सल गुण गाये निगम रे, विरद तहारूं भारी
५६३. महाराजा, तमे तारो तो तरुं रे
५६४. महाराजा, तो रे नामे तरीये रे, प्रभुजी, तो रे नामे तरीये रे
५६५. मारे घेर आवो रे, नंद लाला
५६६. मुज कुं गिरधारीलाल, तेरी मुज कुं आसा
५६७. मेरे तो भरोसो हरी, तेरा नाम को रे
५६८. मेरे प्रभु, द्रुपदी की साह्य करी रे
५६९. मोहन मेरे, नीको हे नाम, तिहारो
५७०. मो कुं दरसन देरे, नंद नंदा रे
५७१. रामजी के चरन रज महीमा ये
५७२. रामा तेरा, तेरा दरस की, में प्यासी, प्यासी में तो उदासी
५७३. लगन लगी रे मोहे, हरी तेरे नाम की
५७४. लगी दरश की खुमारी, देन दीन न रहे न्यारी
५७५. वारी वारी, वांकड बिहारी, गिरीवरधारी
५७६. सामलीया तोरे, सरने आये की, लाज
५७७. सो जपत रहुं में, तिहारे गुन की माला
५७८. हरी दयानिधी कहाय रे, प्रभु लीजे, हमुं निभाय रे
५७९. हरी नाम नो आसरो छे रे हमारे
५८०. हरी बिना, कुन करे मेरी साह्य
५८१. हरी बिना, कुन निभावनहार
५८२. हरी, मारे ते मंदिर आवो रे
५८३. अब मन, परमानंद सुख पायो रे
५८४. अब मन, परमानंद सुख पाय
५८५. आज मैंने अनुभवी हे, रजनी
५८६. आज मारे अंगेरे आनंद, नयने निरख्या नंदनानंद
५८७. आतम राम सें लाग्यो रंग, रंग चढ्यो करारी अभंग
५८८. आली री मोरी, हरी सें सुरती मिली
५८९. क्रीपा करी दीनानाथे माइ मोपे, क्रीपा करी दीनानाथे
५९०. जीन के मन सुद्ध ताकुं घर बेठे कासी
५९१. धन्य धन्य दीनदयाल, देखी दिवाली, हरी निरखी भइ में निहाल, देखी दिवाली

५९२. नागर नट रे, टाल्यो जनम मरण को त्रास
५९३. मन परमानंद सुख पायो हे
५९४. भलेने मारे मंदिर पधार्या, दया करी दिनानाथ
५९५. मगन भयो मन माइ, अब तो
५९६. मन मगन भयो रे हरी, मगन हरी नीरख सें
५९७. मंदिर पधार्या गिरधारी, आज तो मारे, मंदिर पधार्या गिरधारी
५९८. मारे आनंद अंग में व्यापो रे, हरी संपुर्ण नेहज बाध्यो रे
५९९. मारे मंदिर पधार्या गिरधारी रे
६००. मेरी रे आंखीयां, हरी के चरने अटके
६०१. व्हालो मारो, अखंडानंद अद्वैत
६०२. सुंदर मुख, देखु मेरे, मेरे, आनंद धन को
६०३. हुआ मेरा, हिरदा कमल में प्रकासा, प्रकासा तिमिर सब नासा

(सौजन्य : गुजरात वर्नाक्युलर सोसाइटी संगे')

पद संख्या ६०४ सूं ६०७

१. इस नेनु हरीसागर छाया, जीत देखो तीत राम रहाना
२. औचक मिले कुंज मोहन, छबीलसी बिकल भइ
३. माया तर्णी सोभा जोइने, नब पामो रे मोह
४. माया मोह को छांड के, मन निश्रचय धारो

(सौजन्य : गवरीबाई नुं जीवन चरित')

पद संख्या ६०८

१. सुघड श्याम, घनश्याम, संजन से, कब मेरा मिलना होगा वे

(सौजन्य : स्व. गोविंदकुंवर)

पद संख्या ६०९ सूं ६१०

१. हां रे मन राम नाम, रसना ए लइए
२. धिक मरना, धिक जीवना जग में, धिक आदर, धिक मान

(सौजन्य : स्व. गोपालसंकर)

परिसिस्ट (६)

विविध राग-रागिनियां रा पद

प्रभाती—पद सं. १४/४६/५४/५९/७०/७५/७६/८६–८७/१००/११३/१३४–१३६/१३८/१४२–१४३/१४६/१४९/१५२/१५९/१६४–१६५/१७१/१७७/१७९/१८५–१८६/२१८/२९०/३१७/३१९/३२१/३२९/३३३/३७०/४३१–४३२/४७८/४८९/४९२/४९६/५०४/५२४/५३४/५३८/५४३/५४५–५४७/५५१–५५२/५५९/५६६/५८१/५८८/५९३

बसंत—पद सं. ५/२७–२८/४१/७२/७८/८०/१०६–१०७/११६/१२६/१५३/१७६/१९६–१९७/२०६/२१२/२३०/२३१/२९२/४१४/४१९/४२१

'सारंग—पद सं. ४/१७/२०–२१/३१/१०१/१९८/२५१/२५५/३४१/३४३/५१९/५४४/५९६/६०२

मलार—पद सं. २६/४२/९८/११४/११८/११९/१२२/१२८–१२९/१५५/१६६/२१९–२२०/२५६/२९७/३१४–३१५/३४४/३४९/४१३/४३४/४३८/४५०/४५३/४८१/५३१/५५८/५९५/६०१

भैरव—पद सं. १५/३८/२९३/३०२/४४९/४९०/४९८/५०२/५२७/५६७/५७०/५७३/५७९/५८३/५९९

खमायची—पद सं. ३३/१५८/२४५/२५८/२७६/२७८/२८०–२८१/२८५/४४५/४८२/५०७/५८५

धमाल—पद सं. १०/६४/८९/१८०/१९०/१९२/२४९/२५९/३००/३३७/४२६/४४२/४५५/४५७/४६१/४७२/५५५/५८७

कल्यांण—पद सं. २४/३४/३०६/३८१/४२५/४३५–४३६/४६८/४९३/५२५

जेजेवंती—पद सं. १८/१२०/१३३/१९३/२७५/२७७/४२०/५८२

पुरवी—पद सं. १७४/१८८/३०८/३३८/५५७/५६३–५६४

मारु—पद सं. १९५/२७०/५६०/५८४

गोडी—पद सं. ५२/८३/१०८–१०९/१४८/१५१/१५७/१६१/१६७/२०२/२१४/२१६/२४८/३२३/३२४/३३४/३५८

आसावरी—पद सं. ७३/५६८

रामकली—पद सं. ९१/१३०/१६९/१७५/१८३/२४७/३६६/५४२/५८९/५९७

टोडी—पद सं. ९७/२६४

ललित—पद सं. १३२/१६०/२९९

काफी—पद सं. २७१/३६०

सोहेणी—पद सं. २००/५५०

धनासरी—पद सं. ३५४

सोरठ—पद सं. ३५९/४१५/५७६

देवगांधार—पद सं. ५८/१८४/२६०/४१८/५०९

नट—पद सं. ७१/५७७

विलावल—पद सं. ८/३८०/५३७

वीभास—पद सं. २२/३१६/५४१

मेघमलार—पद सं. ४८०

धोल—पद सं. ४०३

कानड़ो—पद सं. ३२६

वेहंगडो—पद सं. १४०/४४७/५७१

मेवाडो—पद सं. ४६०/४७३

गवरी बाई रा रच्या कुछ पद

पद संख्या २८३

...अजहु चेते तो भला रे मन, मायाये सब जुग छल्या रे
लख चोरासी भटकत भटकत् मानव देह छे मल्या रे....
मेरी, मेरी कर जनम गमाया, काल अजगरे गल्या रे
ओर उपाय करो जीव कोउ हरी बिन दुःख नहीं टल्या रे
मोह मदीरा पीके छक्यो रे, विषय पंक में कल्या रे
त्रष्ना जल सरीता में पर्यो रे, सुख सपने नहीं मल्या रे
भुरकी नांखी सब पर माया, रूप देखी ने रल्या रे
दास गवरी कहे चेत बडभागी, प्रभु ने भज्या सो तर्या रे

२८६

....अब समझ रे प्राणी, तुंरे सोदे आया रे
जग हाटवाटी, सदा प्रभु की, सब कोय वणजे आया रे
जन ने जेसा माल खरीदा, तन ने तेसा पाया रे
केने पाया डेढा बमणा, केने मुल सवाया रे
संतों ने पाया माल हरी का, मूरख मूल गमाया रे...
मन्न बेल पर पोठी डार्या, ग्यान बस्त भराया रे
दास गवरी कहे सुफल पेख तुं, टोटा कवुए न आया रे

२८७

अब समझ रे, मन भाई, इस जग में जुठी सगाइ
सगुं समंधी, कलत्र, कुटंब सब, स्वारथ को मल्यो आइ
आखर विरीयां आयगी जब, रहेगी न्यारा चटकाइ, इस जग..
जुठी रे काया, जुठी रे माया, जुठे ब्हेन ओर भाइ
अंत काल कोइ संग न साथी, हंस अकेले जाइ इस..
सुना, चांदी और हीरा, मोती तामें रह्यो ललचाइ
मुआ पीछे सब लुंट चलेगी, पिंजरा दीया जलाइ इस..
कहे गवरी सतगुरु की किरपा, ले गोविंद कुं गाइ
सुक्रीत सोदा कर ले बंदे, आवा गमन मिटाइ इस जग..

३२३

भजन मत भूले रे, मन मोरा
मनुसा को जनम अती दुर्लभ, बेर बेर न पावत भोरा
काम, क्रोध, मोह, माया, मद ओर तृष्णा, दुरमत त्यागी
होये हुंशीयार, हरी कुं भज ले, मोह, नींद सें जागी भजन...
लालच में लग्यो कहा डोले, जग में जीवन थोरा
आखर बेरीयां जम की कर घेरे, हाल बुरा हय तेरा भजन...
सुमरन कर ले निरभे होइ, विषय संग निवारी
गवरी के प्रभु परम क्रपालु, भवसागर से तारी भजन..

(राग गोडी)

३२४

भजन बिना, मिथ्या जनम गमावे
आ संसार धुआ जेसा धवला, हाथ कछु नहीं आवे भजन..
मृगतृष्णा वे सरोवर भरीया, दुर सें नीर दरसावे
नजीक गये जब, प्यास न जावे, उलटा प्रान गमावे भज..
जैसे श्रवान हे हाड कुं चूसता, जीम्या इंद्री कुं वडाने
आपको लोही आाप कुं रवावे, मुरख मन नहीं पावे भजन..
सुपन में निरधन धन पायो, जाग्यो तो तंभी न जावे
गवरी कहे भज ले गोविंद कुं, याते परम पद पावे भजन...

(राग गोडी)

३२५

भुली गयो रे हरी, भुली गयो रे, कोल करी ने गरम मां
जठर अगन मांहे, तुंने राखी लिनो रे
हरी भजन केरे काज, मानव देह दीनो रे भुली गयो रे..
कहा कह्यो, कह कीनो मूरख प्राणी रे
हरी भजन विना पर्यो चोरासी खाणी रे भुली..
कहां से आयो, क्या जावुं, फरी नव जोयुं रे
मोह, माया केरे संग, आयुष तारूं खोयुं रे भुली..
हेते प्रीते हरी भजी सुषमणा मलजो रे
गवरी गुरू सेवा ने करी, सागर भव तरजो रे भुली..

३२६

मत कर मन मगुरूर गुमाना
काची काया छीन में उड जाये, जैसे पीपल का रे पाना मत..
राज पाठ अरू छत्र सिंघासन छांड चले राजा राना
जल गया तेल, बुझाइ गइ मिट्टी, मिट्टी में मिल जानां मत..
बावन बजार, चोरासी चौवटा, सात समुंदर कोट कहाना
सोइ रावण रण में रोलाया, ठाम नहीं रे ठिकाना मत कर..
हीरा, मोती आभूषण प्हेनते, लविंग सोपारी पान खाना
झीणा मलमल, जामा प्हेनते सो चले रे मसाना मत कर..
आवे देखन में, जाये जीन्ने, रूप ने नाम धराना
गवरी राम रूदे नहीं जान्या, दुनिया भुली रे दिवाना मतकर..

(राग कानडो)

३७१

हरी भज रे मन भाइ, अब तुं
आ अवसर बेर, बेर नहीं आवे सो बेरियां समजाइ अब..
क्षण भंगुर अनीत्य छे काया, छिन में ए ही जाइ
उन उपर उमारथ केसा, समज खोज दिलमाइ, अब तुं..
संसार रंग कसुंबा जेसो, उतरतां वार न होइ
जम रा भमरा सिर पर गाजे, क्यूं सूतो निसंकाइ अब तुं..
मृग जल ल्हेर देखी ललचानो, उसे प्यास न जाइ
गवरी कहे भज ब्रह्म सनातन, निरंतर ले ले लगाइ
अब तुं हरी भज...

(राग गोडी)

३६६

हरी भजन मत भूले रे, भोरे मन
काइ समजेगा संत जन, सुने रे भोरे मन हरी भजन..
थोरे कछु लाभ लेने कुं, मूरख खोइ चल्यो मुल
आ संसार सुपनवत् जानो जेसे आकाश के फुल हरी..
धन, जोबन परवत को पानी, बह जायेगा जेसे पूर
काया, माया गरव न करणा, आखिर होएगी ए धर हरी..
दो दन में तुं उड जायगो, जेसे रे आकर तुल
कहे गवरी गुरू पुरण ब्रह्म हरी, अंतर के द्रिग खोल हरी..

३७०

हरी भजन बिना, मिथ्या जनम गमाइ
दीन छते कर दीप ले, पर्यो कुप में जाइ हरी भजन..
पर निंद्या परपंच में दिन धंधे गमाया
रेन गुमाइ सूइ के, घड़ी गोविंद न गाया हरी भजन..
मनुषा देह उतम धरी सुकृत कछुए न कीधुं
पशु नी पेरे चालीयो, कारज एके न सीधुं हरी भजन..
मारूं मारूं कर मूरखा, माया में तुं वायो
गवरी आखर बेरीया कोइ काम नहीं आयो हरी..

(राग प्रभाती)

३७३

हरी भज, हरी भज, हरी भज भाइ
हरी नामे भव पातक नासे, ज्युं रवी उदये तिमीर पलाइ हरीभज..
नाम प्रताप सल्या तर जाइ, गौतम नारी श्राप से मिटाइ
द्रुपदसुता समर्या यदुराइ, द्वारकां से धाये चीर बढ़ाइ हरी
पांच पांडव की कीनी सहाइ, लाखा ग्रहथी लिना बचाई
नाम नावे भवजल तरजाई दास गवरी चरणे ले लाइ
हरी भज...

३१२

नक्कारा मोत का वाजे, कि सावन मेघ ज्युं गाजे
हां रे मन, समझ वे करना कि सतगुरू नाम लीये रहना
अमूलख अवसर आयो, दुर्लभ देह मनुष को पायो नक्कारा..
सिर पर, यम वे लागा, खबरदार चेत मत भागा
क्षमा की खड्ग धरना ने, कि, नाम की बात करना वे नक्कारा..
शील संतोष की चोकी, धिरज से ध्यान धरने की..
ग्यान का भर वे गोला, कुबुद्धि दुर कर भोला नक्कारा..
सोदागर सोदे आया वे, समझ ने मन मेरा वे
अनित्य का भरोसा केसा, छिन में हारेगा एसा नक्कारा..
लक्ष लगी निस–दिन मेरी, लग गइ अलख सें दोरी
आनंद घन, गवरी पाइ, सत्गुरू चरन चित्त लाइ नक्कारा....

(राग रेखतो)

३०१

(मानव अवस्था)

चेत चेत मन अंधा, भज ले नागर नंदा
सुमरण साम लीया नुं करतां, कट जाये यम फंदा भज ले चेत
पुरण ब्रह्म परम कृपाल हे, करूणा सागर सिंधु
अधम उधारण अघ नीवारण, तारण भवजल सिंधु भज ले चेत
कइ जुग बीते विषय रस पीते, अजहु न मुढं अघायो
भव सें भटके, उंधे मुख लटके, फिर जनम्यो फिर जायो भज ले...
प्राणी पडीयो नरक नी खानी, चीडानुं चुंटी खायो
हरी भज मेटो, स्तुती कर छुटो, उदर न कयुं बिसरायो भज ले..
वाहिर आयो, भजन भूलायो, माया में मुरजानो
वालापन में खाया खेल्यो, पर हाथ पर बेठानो भज ले..
जो आंनी में रातो मातो, विषय रंग में भीनो
मोह मदीरा, पीत अधीरा, मुरख मत को हीनो भजले चेत..
त्रीस चाली से बरसे न चेत्यो, पापी पइसो जोडे
कुंटुब कबीलो, विषय में पडीयो, अधीक नेह कुं जोडे भज ले..
आइ साठी बुद्धी सब नाठी, लाठी ग्रहवा लाग्यो
करूप काया, बल घटाया, परमारथ नहीं जाग्यो भज ले..
श्रवणे न बुझे नयणे न सुझे नासिका झरने लागी
कुटंब कहे कब, टरे मरे कब, तोये न चेत्यो अभागी भजले..
यम आ वलगा, सब भये अलगा, मारन लागे प्रहार
तब पछतावे सी धुणावे, अगणित दुःख अपार भजले चेत..
ना दीया दान, न कीया सनमान, कहो केसे आवे आडी
हरी नहीं पुज्या, गुरू नहीं बुझ्या, पडयो चोरासी खाड़ी भजले..
दास गवरी कहे सीव परदेसी पूरण परमानंदा
मन, क्रम, वचने, साचे दल चलने, कटीया यम का फंदा भजले

३२७

मत कोइ गुमान कीजो जी, गोविंद गावे मेवासी
माया, मद में मातो फिरतो, फुल्यो, फुल्यो गिर जासी
मन का भायो करवो मूरख उंधे मुखे लटकासी मत कोइ...
अरब, खरब धन पायो व्होतेरा, चक्रवती कहेवासी
अश्व अती हस्ती फैलाते, वे भी आखर जासी मतकोइ..
सोना, रूपा, हीरा, मोती आभूषण अंग सोहासी
झीणा वस्तर प्हेने खासां वे भी आखर जासी मतकोइ...
रंग म्हेल में सुख ही माणो, चौवा चंदन अंग लगासी
बेठ तखत ओर चमर ढोला वे, वे भी आखर जासी मत...
खटरस भोजन, मेवा मिठाइ, भांत भांत के पासी
सांज, सवेरी मुजरे लेते, वे भी आखर जासी मतकोइ...
राजा, राणा, कायर, सूरा, सब ही विलाइ जासी
गवरी गोविंद गाया बीना, केसे परम पद पासी मत कोइ...

३२८

मन की माला जुग ते फिरे रे
कर में फेर के काज न सरसे, कपट कतरनी दूर करे रे मन..
अपराधी तीरथ में न्हावे, गंगा तीरे वास करे रे
काम क्रोध कोरे रहे फिर, कहा भयो अपंग पखाल करे रे मन..
जल में सल्या बसे निसबासर, याकी कठीनता नहीं गिरे रे
कोटी बरसे निकासी घड़े तब भीतर अगनी झमक झरे रे मन..
मुंड मुडावे, जटा वधारे, कोइ सन्यासी नगन फिरे रे
कहे गवरी प्रेमे प्रभु भज्या विना आवागमन को भय न टले रे मन की.

(राग प्रभाती)

334

मन रे, समझ बूझ कर चलणा
आ अवसर बेर बेर नहीं आवे, हरी हरी नाम उचरण मन रे..
आचार, विचार, मिथ्या मनोरथ, धोखा धंधा परहरणा
कुटुंब केरे संगमत राचे, ग्रहो गिरधर ज्युं के चरणा मन रे..
सिर पर काल खडो हे तेरे, गाफिल क्युं नींद करणा
जेसे मांजारी चूआ कुं झडपे एसे तोए पकडाणा मनरे..
काम क्रोध तेरे हे वेरी दुसरे बेरी नहीं देखणा
रात दीवस रे उन से लडणा, मोह मच्छर परहरणा मनरे..
जो तु वीषय के रस कुं राचे तो लक्षचोराशी में पडणा
गवरी कहे हरी नाम भजन तें भवसागर कुं तरणा मन रे..
(राग गोडी)

३३५

मन साधुनी संगत करतां, विलंब न करीये रे
रूडा निरमल हरीना जस श्रवणे सांभलीए रे
गुरू करी गोविंद ने जीव, भाव सु भजीये रे
काम क्रोध अने वली लोभ, मोहादिक तजीये रे
सतसंग बिना न निपजे नर ने नारी रे
तुं मननुं करवुं मुकीने, जो निरधारी रे
मात, तात, बंधूनी मान,जुठी सगाइ रे
ए मिथ्या मोह निर्लज, के मांडी ठगाइ रे
जेसे बाजीगर का खेल, देखन सब आया रे
नथी तेने छे कलपी लीधुं, एवी छे माया रे
विष रस संसारी ना जाण सुपना सरखा रे
मृग जल पीवा ने धाय न भांजे तरषा रे
मधनी मारवी नी पेरे मुंढ रह्यो लपटाइ रे
पिछे घसवा बेठो हाथ, आखर वेळा आइ रे
जेसे पाणी नो पर पोटो, ऐसो पिंड खोटो रे
उनमें हरी समरण सार, लुंटाये तो लुंटो रे
धन जोबन रे चंचल, अंजली नो पानी रे
वीलाता नहीं जरी वार, ज्युं छे घन दामिनी रे
मन, क्रम बचने करी, स्मरण हरी करीयुं रे
गवरी धन्य घन्य जीव वुं के कारज सरीयुं रे

३४६

बार बार औसर नहीं पेखे मानव देह छे दोहला रे
राम नाम तुं भज ले प्राणी, ब्होर न एसा मेला रे बार बार..
चित प्रभु से कर ले सयाने, समझत क्युं नहीं घेला रे
भवसागर तरबे के कारण नाम ही बांधे भेला रे बार..
नदी नाव संजोग ही मलीयो वटाव चेत ने व्हेला रे
दिनु चार के कुटुंब कबीला, आखिर चलना हे अकेला रे बार बार..
आ संसार सुपन की संपत, प्रगट न पावे अधेला रे
कहे गवरी भज ले भगवाना संत जने दीया हल्लारे बार बार..

३६५

गवरी गउ गोपाल की, चरण चारो रस च्हाय
वांकी टेंढी जो चले तो करे गोपाल सहाय
गवरी करे गोपाल सहाय ज्युं बालक के मात
कालो, घेलो बावरो, तो हुं न छाडे तात ।। १ ।।
गवरी गउ बछुवा से, लगो निरंतर ब्हाल
एसी हरी से प्रीत लगे, तोहुं मिले गोपाल
तोहुं मिले गोपाल जो, आतुरता उर धाय
कहां सीप कहां स्वात बुदं, पुनि आन मिले जो च्हाय।। २ ।।
गवरी गिरधर बांसुरी, व्रन्दावन बजाय
श्रवन सुनी व्रजगोपीका, भूवन तजी के धाय
भूवन तजी के धाय ज्युं, सरीता सिंधु समाय
नदी नाम बिसरी गयो, पुनि दरीया नाम कहाय।। ३ ।।
प्रेम बिना रीझे नहीं, पुरण परी ब्रह्म राय
प्रेमे प्रभुजी पाइये, मन मतंग गल जाय
मन मतंग गल जाय जद, प्रेमे प्रभुजी पाइ
प्रेमे गोपी गल गइ, ज्यूं उदके लूंण समाइ।।४।।
गवरी गुफा समार के, धरे एकंतर ध्यान
प्रेम अंतर प्रगटीया विना, सब ही फीको जान
सब ही फीको जान तुं ज्युं चंद विनु हे रात
अनुभव अरक उग्या विना, कमल गया कमलात।। ५ ।।
कमल गया कमलात जब, मधुकर ले कहां बास
जंत नजदीक फसे बले, पामत नहीं घर पास

पामत नहीं घर पास वो कहा मुंड मुंडाय
प्रेम, भक्ति, हरीनाम बिन, भटक फिरे भव मांय।। ६ ।।
गवरी गोविंद कुं भजो, आठुं प्होर संभार
उरमांथी ते कहा कह्यो, अब क्युं भुल्यो गमार
अब क्युं भूल्यो गमार क्युं गोविंद ने नही गाय
जठर अग्नी की आंच ते, हरी ये कीनी सहाय।। ७।।
गवरी गोविंद कुं भजो, तजी दुनीआ को संग
बात करे विषवाद की, परे भजन में भंग
परे भजन में भंग, दूरमति अरू उपजाये
मुंढ व्रथा के वलोइये, तूप कहां से पाये।। ८।।
गवरी गोविंद कुं भजो, जो कछु सुख तुं च्हाय
ध्यान धरो गिरिधरन को, परमानंद सुख पाय
परमानंद सुख पाय, अष्ट महासिद्धि रहेवे पास
यम धंक्का नहीं पाइये, रहे अमरापुर वास।। ६ ।।
गवरी गोविंद कुं भजो, चरण कमल चित देत
अष्ट प्होर चोसठ घड़ी मधुकर हो रस लेत
मधुकर हो रस पीजीये, त्रिगुणता मिट जाय
मानव देह दुर्लभ सदा, ब्होर नहीं तूं पाय।।१०।।
गवरी गोविंद कुं भजो, समझायो सो बार
मोह, अज्ञान ने मुंढता, टले कोटी विकार
टले कोटि विकार भजे, मन वचन ने क्रियमाण
भवसागर निश्चे तरे, प्होचें पद निखाण।। ११।।

३१५

तेहारा नाम, में मिट्टी की बंधी, मिट्टी से बनाइ देह ये गाफिल गंधी
मिट्टी का ओढना, मिट्टी का जु विछौना आखिर की निशान मिट्टी में समाना
मिट्टी के धन, मिट्टी के भंडार, मिट्टी के हीरा, मिट्टी के सरदार
मिटी के धोडा, मिट्टी के असवार मिट्टी के हस्ती, मिट्टी के राजकुमार
गवरी कहे संसारी तो, आकाश केरे फुल
निज रामनाम समरो, माया देखी मत भुल

(राग मलार)

३१३ (हरी नाम महीमा)

नाम समान न आवे हरीना, नाम समान न आवे रे
धरम नीयम बोहोतेरा पाले, अठसठ तीरथ नावे रे
हीमाले जइ हाड कुं गाले, सिव कुं सीस चडावे रे नाम...
विराग राखी खाये फल फुल, घर तजी वनखंड जावे रे
प्रेम प्रतीत हिरदे नहीं आवत् रात–दिवस कहा गावे रे नाम
नाम तजी अन्य देव आराधे, महीषी सुत दुध पावे रे
दास गवरी सुन, बात रहस की, तोये सतगुरू समझावे रे नाम...

३११

तुं तो समझ मन मगरूर तुज कुं आखर मरना हे
हीरा, मोती, आभूषण प्होरो, तो भी आखर मरना हे तुं तो....
अरब, खरब धन व्होतरी पाया, उदय–अस्त का राज तो भी तुं तो..
पांच, पचीस, पचास ही जीवना, आखिर जीवो सो ऐ तो भी तुं तो..
रूप रंग सब जाति बोलाइ, जंगल में घर करना हे तो भी तुं तो..
गवरी हरी चरने चित धरना, भवसागर कुं तरना हे तो भी तुं तो..

३०४

जगत तुं देख रे झूठा जेसा हे, रेन का सुपना
काहु पे, मोह ना करना मुं से रामनाम कुं जपना जगत तुं..
सुपन में धन बहु पाया, भुवन भूषण हे खासा
देखा जीव जाग के जब ही कोडी एक, ना मिली पासा जगत तुं..
जेसा हे उसका मोती दुर से झगमगे जोती
निकट जब लेने कुं धाया, कछु नहीं हाथ में आया जगत तुं...
जैसा हे सीप का रूपा, उनसें ना आयेगा पेसा
रज्जु में भुजंग हे झुठा, जगत यह जान रे एसा जगत तुं...
मृगजल देख के हरख्या, उनसे ना मीटती तरसा
भोजन चूरेल के राच्या, मूढ मन, होय नहीं साचा जगत तुं...
समर मन हे सरजनहारा, उतरोगे उनसे पारा
मात तात कुटुंब रे काया, अविद्या सूत की माया जगत तुं...
जेसी धुंआ की रे मुठी, तेसी यह देह हे झूठी
गवरी गोविंद ले गाइ, काया घर, पूस की छांही जगत तुं...

(राग रेखतो)

४६०

सतगुरू स्वामी ने, मो पे करूणा करी, देखाया सकल मे रे हरी
रूप ने रंग याके कछुए नहीं रे, निरंजन नीराकार में मली सतगुरू...
जोवा, ग्रहवा तजवा, वरजीत, सखे ज्यूं वायु वाय
सुगंध दुरगंध वीषे, पण छे असंगत, क्यांही ते नारे लेषाय सत...
आत्मा ने उपमा देवाय नहीं महीमा छे अपरंपार
सागर उपमा सागर दिजीये, बीजी समज नी व्हार सत..
ताला कुंची सतगुरू ए आपी घर की सूझ परी
गवरी अनुभव स्वयं प्रकाश्या साक्षी सदा हरी सत..

(राग मेवाड़ो)

४६२

(प्रभु मिलने की राह)

सप्त भुमी के अजव झरूखे, हरी का दरसन पाउं रे
लोक–लाज का, पड़दा में तोहे सो अलग फगाउं रे सप्तभुमी...
नाभ कमल से, ल्हेर चढाउं, उलटा पवन बहाउं रे
हद छांडी बेहद में रहेणा, अनहद नादं सुनाउं रे सप्त भुमी के...
इंगला, पींगला, सुषुमणा साधी त्रिवेणी के त्रट न्हाउं रे
भमर गुफा में, आप बिराजे, जहां में सुरत लगाउं रे सप्त भुमी...
अखंड शोभा अखंड रास हे, वहां में बास बसाउं रे
गवरी कहे करूणा करता के, हिल–मिल मंगल गाउं रे सप्त भुमी के...

गवरी बाई री रची साखियां
पद संख्यां ३६६ मांय

चित चेतन को अंग

गवरी चित में चेतीये, काम, क्रोध कुंटाल।
पांच विषय कुं परहरो, तोही मले किरतार।।१
गवरी चित में चेतीये, लालच–लोभ निवार।
सील, संतोष, समता ग्रहे, हरी उतारे पार।।२
गवरी चित में चेतीये, तजो राग अरू बेर।
सत्य नाम ही समरलो, हरी करेगो म्हेर।।३
गवरी चित में चेतीये, सुं सूतो उठ जाग।
आलस, निद्रा परहरो, हरी भजन को लाग।।४
गवरी चित तो हे भला, जो चेते चित मांय।
मनसा, वाचा, कर्मणा, गोविंद का गुन गाय।।५

हिरदा-शुद्धि को अंग

वेद–पुराण पढ़े पढ़े, षट शास्त्र वेद ने जोय।
हिरदा शुद्ध कीया विना, हरि मिले नहीं कोय।।१
लोटत, मुंडित बहु देखिये, सन्यासी धरे जोग।
हिरदा शुद्ध किया विना, सब ही जानो फोक।।२
जप,तप, आसन वालते, गाले जोगी काम।
हिरदा शद्ध कीया विना, दुर्लभ मिलवो राम।।३
मुनी मौन कुं धारते, फिरे मगन परसन।
हिरदा शुद्ध कीया विना, सुपने नहीं दरसन।।४
अडसठ तीरथ में फिरे कोइ बधारे बाल।
हिरदा शुद्ध कीया विना, मिले न श्रीगोपाल।।५

सतगुरू-कृपा को अंग

जप, तप किये हरी ना मिले पुरन परी ब्रह्मराय।
सतगुरू की किरपा भये, हरी स्हेजे मील जाय।।१
मीठा पे मीठो घणो, मधुर पे छे मधुर।
सतगुरू की किरपा भये, हरी देखे नेन हजुर।।२
ममता मीटाइ हरी, तुंही तुंही भरपूर।
सतगुरू की कीरपा भये, पडल भये हे दूर।।३
बावन अक्षर बाहिरो, पहुंचे ना मति दास।
सतगुरू की कीरपा भये, हरी पेखे पूरन पास।।४
नजीक थी नेडो घणो, दूर थकी हरी दूर।
सतगुरू की कीरपा भये, हरी देखे भरपूर।।५

मिथ्या आचरण को अंग

बन में गये हरी ना मिले, नरत करी नेहाल।
वन में तो भूकते फिरे, मृग रोझ सीयाल।।१
मौन ग्रहे हरी ना मिलें, हिरदे ज्ञान विचार।
मौन ग्रहे बोत देखीये, पंछी कोटी हजार।।२
सुक्षम ते सुक्षम घणों, भारे भेद अतोल।
सतगुरू की कीरपा भये, हरी देखे मूल अमोल।।३
जटा बढ़ाये ना मिले, समझ बुझ तुं जोय।
जब बुढ़ा कुं देखीये बड़े–बड़े बड़ होय।।४
दरी समारे ना मिले, सुनीयो संत सुजान।
दरी में तो बहू दिन वसे, अही उंदर परमान।।५
उंधे झुले हरी ना मिले, अरथ अनुभव तोल।
उंधी झुलती देखीये, बन में सब वागोल।।६

गोविंद-प्राप्ति को अंग

गोविंद किस विध पाइये, मन विषया संग राच्या।
आस करे प्रभु मिलन की, मन माया में नाच्या।।१
कथनी कथे ब्रह्मांड की, भणतर में साचा।
अरथ करे अनूभव का, रेहेनी का काचा।।२
छापां, तिलक बनाय के, परधन की करे आसा।
आत्मतत्व जान्या नहीं, इंद्री रस में माता।।३
सिखे सुने ने सांभले, हिरदा सुद्ध न थाय।
प्रेम प्रतीत आया बिना, रात–दिवस कहा गाय।।४
सोहं ध्यान लगाय के, त्रिगुन कूं टारा।
चोथे पद लय लाइये, गवरी मिले प्यारा।।५
गवरी गिरधर कुं तजी, करे जगत से हेत।
तीन लोक में ठोर नहीं, अंते होय फजेत।।६
गवरी गिरधर कुं तजी, करे आसरो ओर।
याकुं सुपने सुख नहीं, नही नरक में ठोर।।७
गवरी गिरधर कुं तजी माया में लपटाय।
ते नर थोरे दीन में, बांध्या जमपुर जाय।।८
गवरी गिरधर कुं तजी, करे विषय सु व्हाल।
इंद्री के वश जे पर्यो, उनका बुरा हाल।।६
गवरी गिरधर कुं तजी प्रीत करे परीवार।
उनकी मत कुं कहा कहुं, वारंवार धिक्कार।।१०

गवरी बाई अर स्वामी : 'प्रश्नोत्तरी तैंतीसी'
पद संख्या ४०२, मांय

गवरी बाई— गवरी गुरू परमातमा, बंदु शीश नमाय
क्रीपा कर मोही कहीये, भक्ति भेद बताय

स्वामी— भक्ति सकल प्राणी विषे वासुदेव रूप लहीये
अरू सामान्य द्रष्टी राखे, या कुं भक्ति कहीये

१. प्रश्न—स्वामी, ज्ञानी कीस कुं कहीये?
उत्तर— पाये वस्तु फुलत नाहीं, अरू गमाए कछु कमलात नाहीं, या कुं ज्ञानी कहीए।

२. प्र. स्वामी, वैराग्य कीस कुं कहीये?
उ. चौद भुवन परजंत काग विष्ट समतुल देखे, यां कुं वैराग्य कहीये।

३. प्र. स्वामी, अकलवंत कीस कुं कहीये?
उ. मन, वचन, तन ते काहु को उपकार, या कुं अकलवंत कहीये।

४. प्र. स्वामी, सबते श्रेष्ट कीस कुं कहीये?
उ. गुरू गोविंद एक रूप देखे या कुं श्रेष्ट कहीये।

५. प्र. स्वामी, उतम कीस कुं कहीये?
उ. अपने आत्मा कुं चीने, अरू सब वस्तु को त्याग करे या कुं उतम कहीये।

६. प्र. स्वामी, मध्यम कीस कुं कहीये?
उ. ईश्वर की भक्ति करे, अरू संसार व्यवहार में रहेवे, या कुं मध्यम कहीये।

७. प्र. स्वामी कनीष्ठ कीस कुं कहीये?
उ. जप, तप, होम, हवन कछु जाने नहीं, इंद्री के विषे आसक्त रहे, यां कु कनिष्ठ कहीये।

८. प्र. स्वामी, मुरख कीस कुं कहीये?
उ. माया देखी ललचाय, अरू संसार कूप में पड़े या कुं मुरख कहीये।

९. प्र. स्वामी, पुरूषार्थ कीस कुं कहीये?
उ. पुरण पुरषोत्तम, अखंडानंद अद्वैत ब्रह्म कुं जाने, या कुं पुरूषार्थ कहीये।

१०.प्र. स्वामी, चडांल सें बुरा कोन?
उ. परनिंदा कुं करता, या कुं चंडाल से बुरा कहीये।

११.प्र. स्वामी, हरी भक्त कीस कुं कहीये?
उ. काहु की निंदा करत नाहीं, लोभ, कपट रहीत, या कुं हरी भक्त कहीये।

१२.प्र. स्वामी, संसार सागर में बुडवो कहा?
उ. लोभ अरू त्रश्ना, परपंच में पच्यो रहे, या कुं बुडवो कहीये।

१३.प्र. स्वामी, तरवो कहा?
उ. धरम, अरू क्षमा अरू हरीनाम निरंतर लेवे, या कुं तरवो कहीये।

१४.प्र. स्वामी, पडपंच कहा?
उ. असत्य, जड़ अरू शोक, या कुं प्रपंच कहीये।

१५.प्र. स्वामी, ब्रह्म को स्वभाव कहा?
उ. सद्, चित, आनंदरूप सो वेद में कह्यो, या कुं ब्रह्म को स्वभाव कहीये।

१६.प्र. स्वामी, जीवनमुक्त कोन?
उ. संसार की वासना से मुक्त भयो, नित्यानित्य विचार में रहे, या कुं जीवन मुक्त कहीये।

१७.प्र. स्वामी, बंध कीस कुं कहीये?
उ. गुरूकला जाण्या बिना, आपो आप बंधायो जेसे चुडो नगीनाये बांध्यो अरू मरकट मुंढ छोडी सके नहीं या ते पराधीन पर्यो या कुं बंध कहीये।

१८.प्र. स्वामी, सुखी कीस कुं कहीये?
उ. साधु, संतोषी, तत्वदर्शी, जीन के उर मांहे काहु वस्तु की च्हावना नाहीं अरू ज्ञान, विज्ञान, वैराग्य भक्ति में तृप्त रहे, या कुं सुखी कहीये।

१९.प्र. स्वामी, दुःखी कीस कुं कहीये?
उ. कामी, क्रोधी, लोभी, लालची, असंतोषी प्राणी या कुं दुःखी कहीये।

२०.प्र. स्वामी, दरिद्री कीस कुं कहीये?
उ. काहु धनपात्र के आगे हाथ पसारे अरू शीश नमाइ माया कुं जाये, या कुं दरिद्री कहीये।

२१.प्र. स्वामी, जीतवो कीस कुं कहीये?
उ. अपने चंचल मन कुं जीते अरू विषय वासना त्यागे, इन्द्री वश करे, लिंगभंग करे, या कुं जीतवों कहीये।

२२.प्र. स्वामी, वासना लिंग कीस कुं कहीये?
उ. अनात्म, असत्य कुं, सत्य करी माने, आत्मा कुं कवु चिंतन करे नाहीं, अरू मन इंद्री कुं जेसो भाये, तेसो पोखे–पाले याते मलीन वासना में बंधाये, फिर

दीर्घ काल पर्यत लक्ष चौरासी में भमे, याते दु:ख अति पामे, या कुं वासना लिंग कहीये।

२३.प्र. स्वामी, लिंग भंग कीस कुं कहीये?

उ. आत्मा सु आत्मा, तदाकार बुद्धी रहे, अरू बाहिर–भितर में पुरण परमात्मा देखे, नाम, रूप, विनाशी रहे, आत्मा अजर अविनाशी रहे, एसो निरंतर अभ्यास में चित्त समझावे, तब सेहेज समाधी दशा पावे, मोह, माया, दोष सब टले या कुं अणलिंगी कहीये।

२४.प्र. स्वामी त्यागी कुन कुं कहीये?

उ. राग, द्वेष, अभीमान अरू इरषा त्यागे, या कुं त्यागी कहीये।

२५.प्र. स्वामी, ग्रहवो कीस कुं कहीये?

उ. गुरू पदेश ग्रहे, याते जनम–मरण को दु:ख मिटे अरू चोराशी लख जीव योनी को फेरो मिटे, या कुं ग्रहवो कहीये।

२६.प्र. स्वामी, पुरन ब्रह्म कुन कुं कहीये?

उ. चराचर में भरपुर हे, अखंडानंद के कंद अविनाशी अपार हे, अनीर्वचनी अगोचर, जहां मन वाणी पहोंची शके नाहीं, हरख, शोक रहीत आनंदघन निरधार हे, या कुं पुरन ब्रह्म कहीये।

२७.प्र. स्वामी, ईश्वर कुन कुं कहीये?

उ. कर्ता, हर्ता, समर्थ अरू नाना प्रकार के जीव कुं सरजावत हे, तो भी आप निरहंकार हे, जेसे बाजीगर चक नांख के जगत कुं खेल बताता हे, लेकिन आप कुं साचो लगे नाही, एसे ईश्वर निर्विकार, निर्लेप हे, या कुं ईश्वर कहीये।

२८.प्र. स्वामी, जीव कुन कुं कहीये?

उ. अविद्या, अज्ञान के इंद्रीय वस पर्यो अरू आवरण विषय में ढंकायो, जेसे सुरज बादल में छीपायो, एसे जीव माया से लेपायो, या कुं जीव कहीये।

२९.प्र. स्वामी, जीव दशा से मुक्त कुन कुं कहीये?

उ. सत्य गुरू की सान में समझे, अरू में, मेरा अभिमान गाले, तब सुद्ध निज स्वरूप पामे; जेसे हिम निरूप हे अरू पवन के संयोगे कठिनता कुं पायो, जेसे सुरज के तेज से हिमालय पानी हो के बहा, तेसे अभीमान गले, जीव शिव रूप हुआ, या कुं जीवदशा सें मुक्त कहीये।

३०.प्र. स्वामी, सतसंग कुन कुं कहीये?

उ. सत्य वस्तु कुं बतावे, अरू दोष–कलंक जीव को टाले; जेसे पारस के संग लोहा कंचन होवे, जेसे सरिता सिंधू में मिले अरू सागर रूप कहावे, जेसे

कीट भमरी के संग भमरा होवे, एसे सत्यगुरू सतसंगे जीव ब्रह्म में समाय, या कुं सतसंग कहीये।

३१.प्र. स्वामी, डरीए कीन सें?

उ. कुसंग से डरीए, जेसे अहि का काटा म्रत्यु पामे, जेसे अग्नी के संग से जले, जेसे विषपान कीये देह का विनाश होवे, एसे कुसंग में परे विषवाघ खाये, याते यमलोक में जाये, यामें संदेह नाही, या संगते डरीए।

३२.प्र. स्वामी तुरीया दशा किस कुं कहीये?

उ. जीव ब्रह्म एक करीके, जेसे वृक्ष की छाया वृक्ष से जुदी न होइ, जेसे सुरज प्रकाश ओर सूरज में अंतर न होइ, जेसे जल की लेहेरी हे जल रूपा, केसे बतावुं बिन विवेका?

कनक कुंडल एक कहावे, सो स्मृति सांख्य बतावे
एसी एकता उर में जु आये, सो तुरीआ दशा कहाये

३३.प्र. स्वामी, तुरीयातीत दशा किस कुं कहीये?

उ. कैवलय ब्रह्म, अखंडानंद, अद्वैतमयी होवे, अरू द्वैतभाव कछु भासे नाही,

सेवक स्वामी एक थाय, लुणनी पुतली सिंधु मांहे समाय,
उत्पत्ती स्थिति, प्रलय नाहीं, रवी शशी की गम्यता नाहीं।
गवरी प्रश्न तोसु कह्यो, अणछतो मान आभास;
विश्व वस्तुरूप जाणीए, चिदानंद विलास,
चिदानंद चिदरूप रे, हे सुपनवत संसार,
ज्युं दरपन मुख देखीये, साचो नहीं नीरधार,
—प्रश्न से मन परसन भयो, टल्यो मन को संदेह,
गवरी गुरू कीरपा करी, याते भये विदेह।

संदरभित पोथ्यां, पत्र-पत्रिकांवां, वारता आद

(अ) पोथ्यां

१. डूंगरपुर राज्य का इतिहास (प्रथम संस्करण वि.सं. १९९२) (गौरीशंकर—हीराचंद ओझा) वैदिक यंत्रालय, अजमेर

२. डूंगरपुर राज्य का इतिहास (उतरार्द्ध) (मातृ भाषा का लघु सेवक : एक ब्राह्मण) प्रथम संस्क. वि.स. १९७९, वैदिक यंत्रालय, अजमेर

३. इतिहास रियासत, डूंगरपुर (पं. श्रीराम दीक्षित) प्रथम संस्करण, यंत्रालय मेरठ

४. उदय प्रकाश (संढायच किसनसिंह) वि.सं. १९६७, स्टेण्डर्ड प्रेस, इलाहाबाद।

५. वागड़ और उसका साहित्य (प्रो. मथुरा प्रसाद अग्रवाल) प्रथम संस्क. १९६६ वागड़ परिषद्, डूंगरपुर

६. आपके अपने गीत (सम्पा. प्रो. मथुरा प्रसाद अग्रवाल) प्रथम संस्क. १९६५ शारदा संगीत कला मंदिर, डूंगरपुर

७. ओरकेण (सम्पा. जयप्रकाश पण्ड्या' ज्योतिपुंज) प्रथम संस्क १९८०, वागड़ प्रदेश, साहित्य परिषद्, डूंगरपुर

८. भारत भक्ति स्तोत्रम् (संस्कृत—हिन्दी व्याख्या) गिरिराज शर्मा वि.सं. २०२९, संस्कृत प्रचार परिषद्, जयपुर

९. मानव जीवन के चौदह रत्न (पं. कन्हैयाराम) प्रथम संस्क., वि.सं. २०२१,

१०. नवधा भक्ति (जयदयाल ग़ोयन्दका) नवम संस्क,. वि.सं. २००८, गीता प्रेस, गोरखपुर

११. गीता का व्यवहार दर्शन (रामगोपाल मोहता) द्वि.संस्क., १९३८,

१२. राजस्थानी भाषा और साहित्य (डॉ. मोतीलाल मेनारिया) तृतीय संस्क. वि.सं. २०१७ हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

१३. राजस्थान का पिंगल साहित्य (डॉ. मोतीलाल मेनारिया) प्रथम संस्क. १९५२, हितैषी पुस्तक भंडार, उदयपुर

१४. सांस्कृतिक राजस्थान, प्रथम संस्करण १९८२ अ भा मारवाड़ी सम्मेलन, महात्मा गांधी रोड, कलकता–७

१५. संस्कृत एवं राजस्थानी की ऐतिहासिक कृतियों का विवेचन (डॉ. हुकमसिंह भाटी) १९८८ प्रताप शोध प्रतिष्ठान, भूपाल नोबल्स संस्थान, उदयपुर

१६. वाणी : गवरी कीर्तन माला (संपा. 'मस्त') प्रका. गोपाल शंकर–प्राण शंकर भचेच, सन् १९३७ (अहमदाबाद)

१७. राजस्थान एवं गुजरात के संत एवं भक्त कवि (डॉ. मदनकुमारजानी)

१८. हिन्दी साहित्य को गुजरात के कवियों की देन (डॉ. रामकुंमार गुप्त)

१९. गुजरात के हिन्दी गौरव ग्रंथ (डॉ. अम्बाशंकर नागर) गंगा पुस्तक माला कार्यालय, लखनऊ

२०. गुजरात के संतों की हिन्दी वाणी (सम्पा. डॉ. अम्बाशंकर नागर) गुर्जर भारती, अहमदाबाद

२१. संत चरित्र प्रकाश (सूरत के कवि दुलाराम) : सम्वत् १८३०–७०

२२. मनुष्य कृत्य सार (आचार्य श्री कुंथुसागर) डूंगरपुर

२३. मीरां सुधा सिन्धु (स्वामी आनन्द स्वरूप) प्रथम संस्क. वि. सम्वत् २०१४ मीरां प्रकाशन समिति, भीलवाड़ा

२४. मीरां सुधा लहरी (स्वामी आनन्द रूवस्प) प्रथम संस्क.वि. सं २०१४

२५. मीरां बाई ऐतिहासिक व सामाजिक विवेचन (डॉ. हुकमसिंह भाटी, प्रथम संस्क. १९८६ रतन प्रकाशन, जोधपुर

२६. गरवी संग्रह (प्रथम भाग) राधेश्याम जोशी प्रथम संस्क.वि.सं २०२१ भट्यानी चौहट्टा, उदयपुर

२७. सहज प्रकाश (सहजो बाई) वि.सं.२० १४ वेंकटेश्वर प्रेस, बंबई

२८. गुजराती साहित्य नां मार्ग–सूचक स्तम्भो (श्रीकृष्ण लाल झवेरी)

२९. गुजरात नीं स्त्री कविओ :

३०. गवरी–चरित्र (अचरतलाल भचेच)

३१. गुजराती साहित्य का इतिहास (जयंत कृष्ण–हरिकृष्ण दवे) प्रथम संस्क. १९६३ हिन्दी समिति, लखनऊ

३२. रामानुजाचार्य विशिष्टाद्वैतिक भक्ति–दर्शन (डॉ. सरनामसिंह शर्मा) कृष्णा ब्रदर्स, अजमेर

३३. राजस्थानी भाषा और साहित्य (डॉ. हीरालाल माहेश्वरी)

३४. संचयनिका (सम्पा. याज्ञवल्क्य गुरू) प्रथम संस्क. १९८४ व्यास बुक सेंटर, बीकानेर में प्रकाशितः "राजस्थान के संत–सम्प्रदायों की हिंदी–साहित्य को देन" (श्रीमती कमला अग्रवाल)

३५. यदुवंश भाटियों की वंशावली और उनका गौरव (भाटी इतिहास समिति, उदयपुर)

(आ) पत्र-पत्रिकांवां, वारता आद

१. 'परम्परा' शोधात्मक पत्रिका भाग १५–१६ ''राजस्थानी साहित्य का मध्यकाल'' सम्पा. डॉ. नारायणसिंह भाटी, राजस्थानी शोध–संस्थान, जोधपुर

२. 'वाग्वर' त्रैमासिक शोध पत्रिका, वागड़ साहित्य परिषद् डूंगरपुर भाग १ अंक १–२–३–४; भाग २, अंक १; भाग १५ , अंक २–३ संयुक्तांक; भाग २१, अंक २;

३. 'वागड़ पत्री' (त्रैमासिक) डूंगरपुर, सम्पा. जयप्रकाश पण्ड्या 'ज्योतिपुंज' के अंक

४. 'राजस्थानी रत्नाकर' (शोध–त्रैमासिक) प्रका–शंकरसिंह सोलंकी, डूंगरपुर

५. 'मरूश्री' (शोध–त्रैमासिकी) भाग ४, अंक ४, सितम्बर १६७५ सम्पा. गोविंद अग्रवाल नगर श्री चुरू

६. 'प्रज्ञा' वार्षिकी, डूंगरपुर, भाग–१, अंक–१, (१६६३–६४) प्रो. मथुरा प्रसाद अग्रवाल

७. 'मीरा–उत्सव स्मारिका' ६२, '६३, ६४ मीरा स्मृति संस्थान, चितौड़गढ़

८. 'मरू भारती' त्रै. पिलानी भाग ५, अंक ४, जनवरी ५८ (राजस्थान का एक विस्मृत संत : वागड़ प्रदेश का मावजी, प्रो. मथुरा प्रसाद

६. 'शोध पत्रिका' त्रै. उदयपुर, भाग ६, अंक २, दिसम्बर ५७ (वागड़ प्रदेश के भीलों का प्रथम उद्धारक : गोविंद गिरि : प्रो. मथुरा प्रसाद)

१०. काशी नागरी प्रचारिणी पत्रिका, वि. सं. २०१५, अंक २, 'गुजरात की हिन्दी सेवा' (डॉ. अंबाशंकर नागर)

११. 'आराम' (दीपोत्सवी अंक) वि. सं. २००५, 'उतर भक्ति युग नी ज्ञानाश्रयी कविता' (के.का. शास्त्री)

१२. वागड़ रा अमोलक रचनाकार : सूरमा अभेसिंग : प्रो. मथुरा प्रसाद अग्रवाल द्वारा राजस्थानी वारता (आकासवाणी : १७.६.६३)

१३. राजस्थांनी री सगुण भक्ति री कवयित्रियां : प्रो मथुरा प्रसाद अग्रवाल द्वारा राजस्थांनी वारता (आकासवाणी : २४.२.८३)

१४. भक्तिमती गवरी बाई अर तत्कालीन समाज : प्रो. मथुरा प्रसाद अग्रवाल द्वारा राजस्थानी वारता (आकासवाणी : १७.६.६४)

१५. दक्षिणी राजस्थान री राजस्थानी कवयित्रियां अर समाज सुधार : श्रीमती कमला अग्रवाल द्वारा राजस्थानी वारता (आकासवाणी : २३.६.६४)

१६. राजस्थानी साहित मांय मेवाड़ नै वागड़ अंचल रो योगदान : (अभिभासण) प्रो. मथुरा प्रसाद अग्रवाल : 'जागती जोत' राजस्थानी, मासिक, बीकानेर, भाग २३, अंक १, अप्रेल १६६४, पृ. ५१–५८

१७. वागड़ी नुं जुनूं ने 'नबु साहित' (अभिभासण) : जय प्रकाश पण्ड्या 'ज्योति पुंज' वागड़ी साहितकार सम्मेलन, डूंगरपुर, दि. २७.१२.८०

राग वसंत

(कैवल्य धाम)

चलो हंसा जइये, वसो विदेश। जांहां जनम जरा नहीं उन देस।।
जांहां रवि शशी को नहीं परवेस। जांहां दिन रजनी नहीं है लेस।।
परम धाम, परम निवास। पूरण पुरशोत्तम, अखंड अविनाश।।
नहीं जप,तप जहां क्रिया करना। नहीं वरणा वरण जहां आश्रम।।
एक वरण एक जात सोहाये। मेरी सुरता, रही ले लाये।।
राग द्वेष, नहीं मै तूं कोये। सद् ,चिद, आनंद परम सब होये।।
हरख, शोक, कछु नांही विकार। निजानंद नित्य करत विहार।।
पवन कूं गम ना जहां होये। पंछी उड़ सके नहीं कोये।।
गवरी जहां नहीं जीव जंत रे। गोपी गोपाल रमे वसंत रे।।

Indian Institute of Advanced Study
115856
11/11/2004
SHIMLA

'........नारी नारायणी' वण ने नारी-गौरव अर आदर्स रो प्रतीक वर्णी । वागड़ री धरोहर : गवरी; वड़नगरा नागर ब्राह्मण कुल री दीप-सिखा : गवरी; दक्षिणी राजस्थान री नारी रतन : गवरी; भारत-भोम री नारी-सगित रो अलबेलो बिंब : गवरी; सगुण-निरगुण री मिली-जुली गंगा-जमनी : गवरी ।

मथुराप्रसाद अग्रवाल (जळ्म : 14.12.1927) राजस्थान में राजकीय स्नातकोत्तर कॉलेज रे हिन्दी विभाग रे अध्यक्ष पद उं सेवानिवृत्त, पेली राजस्थान साहित अकादमी अर कला संकाय, राजस्थान विस्वविद्यालय रा सदस्य रह्या, राजस्थान रे दक्षिणांचल—मेवाड़ अर वागड़—रो सांस्क्रतिक-साहितिक सरवेक्षण अर अध्ययन करवा वारा, 'वागड़ अर वर्णी रो साहित' अर दूजी सोलह पोथ्यां छप चुकी, वागड़ी री कहावतां-मुहावरां, लोककथांवां रा संग्राहक, आकासवाणीं उं राजस्थांनी वारतांवां रो नियमित प्रसारण व्हेतो रे अर नामी सोधपत्रिकांवां में रचनांवां प्रकास पाती रे ।

साहित्यरत्न जयप्रकास पंड्या 'ज्योतिपुंज' एम.ए. (त्रय), (जळ्म : 28.9.1952) राजस्थानी भासा, संस्क्रति अर साहित अकादमी, बीकानेर अर साहित अकादेमी, नई दिल्ली री राजस्थांनी समिति रा सदस्य, दक्षिणी राजस्थांन रा ख्यातनामा कवि, नाटककार अर कलाकर्मी, *बोल डूंगरी ढब ढबुक* (सूर्यमल्ल मिश्रण पुरस्कार उं सम्मानित) अर दूजी चवदह पोथ्यां छप चुकी, वागड़ परिषद्, वागड़ी विकास समिति रा संस्थापक-संचालक अर 'वांगड़ पत्री' रा संपादक ।

ISBN 81-260-0000-7

पन्द्रह रीपिया

Library IIAS, Shimla
RJ 817.509 2 Ag 81 G
00115856